सतलुज धारा
2017 - 18

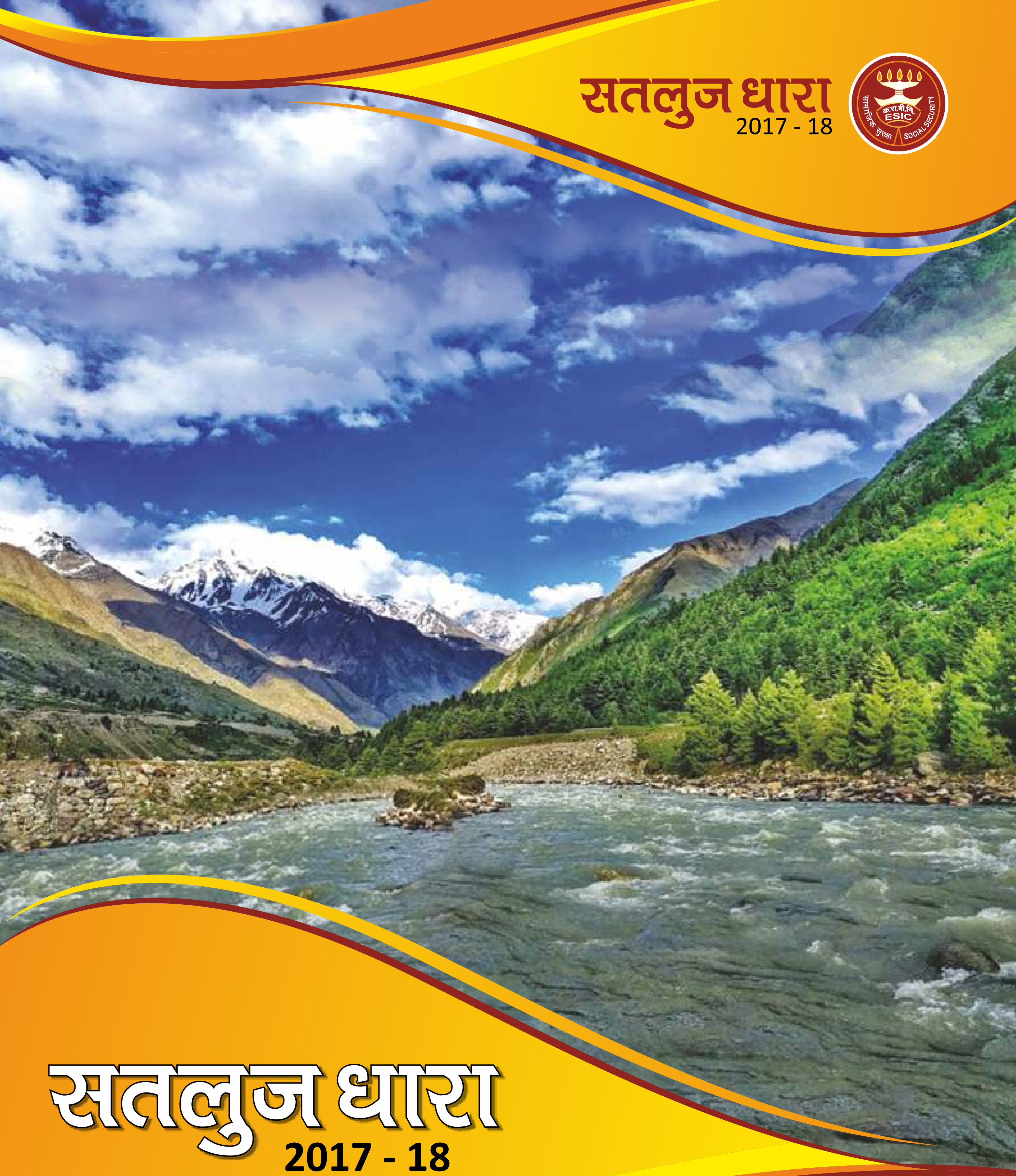

सतलुज धारा
2017 - 18

कर्मचारी राज्य बीमा निगम, पंजाब क्षेत्र

राजभाषा पुरस्कार

महामहीम राज्यपाल, उत्तर प्रदेश श्री राम नाईक जी के कर–कमलों से 'ख' क्षेत्र में वर्ष 2016–17 में श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए प्रथम पुरस्कार ग्रहण करते हुए क्षेत्रीय निदेशक श्री सुनील तनेजा।

महामहीम राज्यपाल, उत्तर प्रदेश श्री राम नाईक जी के कर–कमलों से 'ख' क्षेत्र में वर्ष 2016–17 में श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए प्रशस्ति पत्र ग्रहण करते हुए सहायक निदेशक राजभाषा श्री राजेश शर्मा।

सतलुज धारा
2017 - 18

क्षेत्रीय कार्यालय
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
पंचदीप भवन, प्लॉट सं.–03, सैक्टर–19ए,
मध्य मार्ग, चंडीगढ़–160019

महानिदेशक महोदय के कर–कमलों से 'ख' क्षेत्र में वर्ष 2016–17 में श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए प्रथम पुरस्कार ग्रहण करते हुए कार्यालय के अधिकारीगण

महानिदेशक महोदय के कर–कमलों से 'ख' क्षेत्र में वर्ष 2016–17 में श्रेष्ठ गृह पत्रिका सतलुज धारा के लिए प्रथम पुरस्कार ग्रहण करते हुए कार्यालय के अधिकारीगण

सतलुज धारा
2017 - 18

संपादक–मंडल

संरक्षक

सुनील तनेजा
क्षेत्रीय निदेशक

संपादक

राजेश शर्मा
सहायक निदेशक (राजभाषा)

श्याम कुमार
उप निदेशक (राजभाषा)
उत्तरी अंचल

संपादन सहयोग

अश्वनी कुमार, वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक
कृष्णा कुमारी, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक
तृप्ती दीक्षित, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के निजी विचार हैं। इससे संपादक मंडल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। लेखों/रचनाओं की मौलिकता के लिए लेखक/रचनाकार स्वयं उत्तरदायी है।

क्रमांक	विषय	रचनाकार / संदर्भ	पृष्ठ

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
Employees' State Insurance Corporation
पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली–110 002
Panchdeep Bhawan, C.I.G. Marg, New Delhi-110 002
WEBSITE : www.esic.nic.in • www.esic.india.org

राज कुमार (भा.प्र.से.)
महानिदेशक

सन्देश

यह बड़ी खुशी की बात है कि क्षेत्रीय कार्यालय, पंजाब द्वारा गृह पत्रिका **''सतलुज धारा''** का प्रकाशन किया जा रहा है। निगम इकाइयों द्वारा प्रकाशित पत्रिकाओं में श्रेष्ठ सम्पादन की दृष्टि से **''सतलुज धारा''** अपना विशिष्ट स्थान रखती है। आशा है कि पत्रिका का यह अंक भी पिछले अंक की भांति आकर्षक तथा विविध ज्ञानवर्धक रचनाओं से ओत–प्रोत होगा।

पत्रिका के आगामी अंक के सफल प्रकाशन हेतु हमारी शुभकामनाएँ।

राज कुमार

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
Employees' State Insurance Corporation
पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली–110 002
Panchdeep Bhawan, C.I.G. Marg, New Delhi-110 002
WEBSITE : www.esic.nic.in • www.esic.india.org

संध्या शुक्ला (भा.ले.ले.से.)
वित्तीय आयुक्त

सन्देश

यह हर्ष का विषय है कि क्षेत्रीय कार्यालय, पंजाब अपनी गृह पत्रिका **''सतलुज धारा''** का निरन्तर प्रकाशन कर रहा है। निश्चित ही यह चंडीगढ़ क्षेत्र में तैनात कार्मिकों के सहयोग एवं हिंदी के प्रति प्रेम का परिचायक है। मुझे यह विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक भी राजभाषा हिन्दी के विकास क्रम को आगे बढ़ाने में अत्यंत उपयोगी होगा।

शुभकामनाओं सहित,

संध्या

(संध्या शुक्ला)

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
Employees' State Insurance Corporation
पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली–110 002
Panchdeep Bhawan, C.I.G. Marg, New Delhi-110 002
WEBSITE : www.esic.nic.in • www.esic.india.org

स्वदेश कुमार गर्ग
बीमा आयुक्त

सन्देश

अपने नाम को यथार्थ करती हुई "**सतलुज धारा**" पत्रिका की गति वास्तव में धारा के समान ही प्रवाहित हो रही है और अभी अपने पिछले ही पड़ाव में यह पत्रिका निगम मुख्यालय द्वारा 'ख' क्षेत्र में पुरस्कृत भी की गई। क्षेत्रीय कार्यालय, पंजाब के कर्मियों का राजभाषा के प्रति प्रेम न केवल सराहनीय है बल्कि उनकी मेहनत भी इसमें स्पष्ट परिलक्षित होती है।

आशा है कि पहले की तरह यह अंक भी सफल होगा।

"**सतलुज धारा**" के सफल प्रकाशन के लिए मेरी शुभकामनाएँ ।

स्वदेश कुमार गर्ग

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
Employees' State Insurance Corporation
पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली–110 002
Panchdeep Bhawan, C.I.G. Marg, New Delhi-110 002
WEBSITE : www.esic.nic.in • www.esic.india.org

अरूण कुमार
बीमा आयुक्त (का.एवं प्रशा.)

सन्देश

यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई कि राजभाषा के प्रचार–प्रसार हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, पंजाब अपनी गृह पत्रिका **''सतलुज धारा''** के अगले अंक का प्रकाशन करने जा रहा है । मेरा विश्वास है कि यह पत्रिका क्षेत्रीय कार्यालय में तैनात कार्मिकों को राजभाषा हिन्दी में मूल लेखन और सृजनशीलता की ओर अग्रसर करेगी। आशा है कि पत्रिका का आगामी अंक अपनी गरिमा के अनुसार पाठकों की अपेक्षाओं के अनुरूप होगा।

मंगल कामनाओं के साथ,

(अरूण कुमार)

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
Employees' State Insurance Corporation
पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली–110 002
Panchdeep Bhawan, C.I.G. Marg, New Delhi-110 002
WEBSITE : www.esic.nic.in • www.esic.india.org

ए. के. सिन्हा
बीमा आयुक्त

सन्देश

भाषा की गति एक सरिता की भांति होती है और "**सतलुज धारा**" का नाम ही भाषा की गति को सार्थक करता रहा है। पूर्व में भी "**सतलुज धारा**" ने अनेक स्तरों पर अपना अस्तित्व सिद्ध करके दिखाया है। मैं आश्वस्त हूँ कि क्षेत्रीय कार्यालय, पंजाब के कार्मिक अपनी लेखन क्षमता से इस अंक में भी कोई कोर–कसर नहीं छोड़ेंगे।

यह पत्रिका अपने उद्देश्य में सफल हो इसके लिए मेरी ओर से शुभकामनाएँ।

ए. के. सिन्हा

संरक्षक की कलम से...

अभी हाल ही में क. रा. .बी. निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, पंजाब को राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए पुरस्कार प्रदान किया गया है। यह पुरस्कार राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट प्रदर्शन (बल्कि उपलब्धियाँ कहना उचित होगा) के लिए गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा 'ख' क्षेत्र के लिए माननीय राज्यपाल श्री राम नाईक के कर– कमलों से प्राप्त हुआ है।

बसंत भी अब लौट रहा है और इधर गृह पत्रिका **'सतलुज धारा'** का एक और अंक तैयार है। पिछले अंक में निगम में 'ख' क्षेत्र में प्रथम पुरस्कार प्राप्त और कार्यान्वयन में भी प्रथम पुरस्कार प्राप्त – पुरस्कारों की कड़ी में मैं यह देखकर अभिभूत हूँ कि पंजाब राज्य में राजभाषा के प्रति कितना अधिक प्रेम है। निश्चित रूप से यह सब और यह अंक भी पंजाब राज्य के निगम कार्यालय के कर्मियों की लेखन क्षमता, ऊर्जा, राजभाषा के प्रति निष्ठा ही है कि हम 'ख' क्षेत्र के कार्मिक पुरस्कार प्राप्त कर रहे हैं। मैं यह भी मानता हूँ कि पुरस्कार किसी के लिए भी पहला और आखिरी मानदण्ड नहीं होते, परन्तु हमें हर मंच पर पहचान मिल रही है। इसके लिए मैं पंजाब के सभी निगम कर्मियों के कार्यों की सराहना करता हूँ। राजभाषा शाखा के कर्मी अथक प्रयास से राजभाषा सुगंध के पुष्पों को पिरोते रहते हैं, माला बनती रहती है और बसंत के पुष्प, फाग के रंग, इसमें मिलकर एक ठंडी बहार ले आते हैं – आनन्द भी आता ही है।

निश्चित रूप से इस अंक में भी हमारी मेहनत देखने को मिलेगी। यह पत्रिका आपके समक्ष है। हाँ, हमेशा की तरह आपकी प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सुनील तनेजा
क्षेत्रीय निदेशक

संपादक की कलम से...

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा दिनांक 09 फरवरी, 2018 को वाराणसी में आयोजित पुरस्कार विवरण समारोह में 'ख' क्षेत्र में स्थित केन्द्र सरकार के कार्यालयों में श्रेष्ठतम राजभाषा कार्यान्वयन के लिए क्षेत्रीय कार्यालय, पंजाब को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया है। यह पंजाब क्षेत्र के कार्मिकों के लिए गर्व और गौरव का विषय है।

पंजाब क्षेत्र के कार्मिकों ने राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति सदैव ही गंभीरता एवं निष्ठा दिखाई है। गृह पत्रिका **"सतलुज धारा"** को मुख्यालय द्वारा हाल ही में प्रथम पुरस्कार प्रदान किया जाना इस क्षेत्र के कार्मिकों की राजभाषा नियमों के अनुपालन एवं सृजनशीलता का द्योतक है। मैं उपर्युक्त विशिष्ट उपलब्धियों के लिए सभी अधिकारियों/कर्मचारियों की मुक्त कण्ठ से सराहना करता हूँ। निःसन्देह पुरस्कार प्राप्त करना सभी के लिए हर्षातिरेक का विषय है परन्तु पुरस्कार बनाए रखना अपने आप में एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। आशा है कि हम सब मिलकर इस चुनौतीपूर्ण कार्य को पूरे मनोयोग से निष्पादित करेंगे। अभिनव जोश के साथ पुनः पुरस्कार प्राप्ति के लिए अपने कार्य को और अधिक श्रेष्ठतर बनाने के लिए सतत प्रयास करते रहेंगे।

इन्हीं नूतन प्रयासों की श्रृंखला में पंजाब क्षेत्र के कार्मिकों की गरिमामयी रचनाओं रूपी पुष्पों की माला गूंथ कर **"सतलुज धारा"** का यह अंक भी आपको समर्पित कर रहा हूँ। सभी रचनाकारों का हृदय से आभार।

"सतलुज धारा" के प्रकाशन से प्रत्यक्ष या प्रोक्ष रूप से जुड़े सभी सहयोगियों का भी हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। मैं राजभाषा कार्मिकों के अथक सहयोग की भी सराहना करता हूँ जिनके सतत प्रयास निःसंदेह प्रशंसनीय हैं।

आशा है **'सतलुज धारा'** का यह अंक आपकी आकांक्षाओं पर खरा उतरेगा। आपके मूल्यवान सुझावों की प्रतीक्षा में....

राजेश शर्मा
सहायक निदेशक
(राजभाषा)

कर्मचारी राज्य बीमा निगम

सुशील कुमार
सहायक निदेशक

(विश्व की सबसे बड़ी व श्रेष्ठ सामाजिक सुरक्षा योजना)

दर्द का अहसास वही कर पता है जो कभी किसी पीड़ा से स्वयं गुजरा हो। स्वतंत्रता के पश्चात् जब देश विकास की ओर अग्रसर था, उसी समय करखानों/फैक्ट्रियों में श्रमिकों की मांग बढ़ी और समय के चलते वे बीमार/घायल भी हुए। ऐसे में आवश्यकता थी श्रमिक वर्ग को एक ऐसी सामाजिक सुरक्षा की जो उन्हें समयानुसार धन से, चिकित्सा से मदद दे सके और ऐसे समय में कर्मचारी राज्य बीमा निगम की सामाजिक सुरक्षा की नींव पड़ी जो आज विश्व की सबसे बड़ी सामाजिक सुरक्षा योजना है और करोड़ों श्रमिकों के लिए आशा का दीप है। कर्मचारी राज्य बीमा निगम उनके आशादीप को प्रज्वलित रखने के लिए पंचदीप के तहत कार्य करता है। निगम के पंचदीप के तहत क्या–क्या योजना है, आइए उसका एक अवलोकन कर लें –

कर्मचारी राज्य बीमा निगम एक बहु आयामी सामाजिक सुरक्षा व्यवस्था है, जो कर्मचारियों एवं उनके आश्रितों को सामाजिक–आर्थिक सुरक्षा प्रदान करता है। कर्मचारी राज्य बीमा निगम की स्थापना कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम 1948 के अन्तर्गत हुई तथा कर्मचारी राज्य बीमा योजना वर्ष 1952, दिनांक 24 फरवरी को कानपुर और दिल्ली से आरम्भ की गई। कर्मचारी राज्य बीमा निगम एक शीर्ष इकाई है जिसमें कर्मचारियों, नियोजकों, केन्द्रीय सरकार, राज्य सरकारों, संसद, चिकित्सा वर्ग से जुड़े हुए लोगों के प्रतिनिधि होते हैं। अधिनियम के अन्तर्गत निगम को योजना से संबंधित विनियम बनाने की शक्तियां प्रदान की गई हैं। कर्मचारी राज्य बीमा निगम ही अधिनियम के प्रावधानों के अनुसार कर्मचारी राज्य बीमा योजना का संचालन करता है जो कि स्व–वित्त पोषित सामाजिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य बीमा योजना है। कर्मचारी राज्य बीमा योजना के अन्तर्गत निगम द्वारा कर्मचारियों को जो कि व्याप्त इकाइयों में कार्यरत हों, समुचित सामाजिक सुरक्षा प्रदान की जाती है। वे कर्मचारी जो 21,000/– रुपये प्रतिमाह से कम वेतन पाते हैं, इसके पात्र हैं। इसमें कर्मचारियों का योगदान 1.75 प्रतिशत तथा नियोजक का योगदान 4.75 प्रतिशत होता है। यह सामाजिक सुरक्षा निम्नलिखित हितलाभों के रूप में प्रदान की जाती है:

1. **चिकित्सा हितलाभ** :– बीमाकृत व्यक्ति को बीमा योग्य रोजगार में आने के पहले दिन से ही चिकित्सा हितलाभ मिलता है। यह हितलाभ बीमाकृत व्यक्ति के पूरे परिवार को मिलता है जिसमें पत्नी या पति, बच्चे व आश्रित माता–पिता शामिल हैं। सेवानिवृत्त बीमाकृत व्यक्तियों और उसके पति/पत्नी को रुपये 120/– के एकमुश्त वार्षिक भुगतान पर चिकित्सा देखरेख प्रदान की जाती है।

2. **बीमारी हितलाभ** :– जब कोई बीमाकृत व्यक्ति बीमार हो जाता है तथा अपने काम पर नहीं जा पाता है तो उसे अक्षमता की अवधि में मजदूरी में होने वाली क्षति की पूर्ति निगम द्वारा नकद हितलाभ के रूप में की जाती है। कर्मचारी को प्रमाणित बीमारी अवधि के दौरान एक वर्ष में अधिकतम 91 दिनों के लिए उसकी दैनिक मजदूरी के 70 प्रतिशत की दर से नकद हितलाभ के रूप में देय होता है। बीमारी हितलाभ की पात्रता के लिए बीमाकृत कर्मचारी द्वारा 6 महीनों की अंशदान अवधि में 78 दिनों के लिए अंशदान अदा किया जाना चाहिए।

   इसके अतिरिक्त 34 घातक और दीर्घकालीन बीमारियों के मामलों में विस्तारित बीमारी हितलाभ दिया जाता है जो दैनिक वेतन के 80% की दर से दो वर्षों तक विस्तारित किया जा सकता है। इसके अलावा बीमाकृत व्यक्तियों द्वारा बंध्यकरण कराने पर वर्धित बीमारी हितलाभ पुरुष और महिला कर्मचारियों को क्रमशः 7 दिन/14 दिन के लिए पूर्ण दैनिक वेतन के बराबर देय होता है।

3. **प्रसूति हितलाभ** :– महिला कर्मचारियों को प्रसूति हितलाभ छब्बीस सप्ताह तक मिलता है। यदि प्रसूति, गर्भावस्था इत्यादि के कारण महिला बीमार हो जाती है तो चिकित्सा परामर्श पर नकद हितलाभ की अवधि एक माह तक बढ़ाई जा सकती है। इस हितलाभ की दर कर्मचारी के पूरे वेतन के बराबर होती है। नकद हितलाभ के साथ–साथ महिला कर्मचारी को चिकित्सा हितलाभ भी देय होता है।

4. **अपंगता हितलाभ** :– यदि कोई कर्मचारी काम के दौरान अथवा काम के कारण दुर्घटनाग्रस्त हो जाता है तो उसे रोजगार दुर्घटना मानते हुए कर्मचारी को अक्षमता की अवधि में अस्थायी अपंगता हितलाभ मिलता है जो कि उसके दैनिक वेतन के 90 प्रतिशत के बराबर होता है। यह हितलाभ कर्मचारी को बीमा योग्य रोजगार में आने के पहले दिन से देय होता है।

जब बीमाकृत व्यक्ति की अस्थायी अपंगता की स्थिति समाप्त हो जाती है तथा उस रोजगार दुर्घटना से यदि कोई स्थायी अपंगता बीमाकृत व्यक्ति के शरीर में आ जाती है तो चिकित्सा बोर्ड द्वारा निर्धारित अर्जन क्षमता की हानि की प्रतिशतता पर निर्भर यह हितलाभ मासिक भुगतान के रूप में उस बीमाकृत व्यक्ति को पूरा जीवन स्थायी अपंगता हितलाभ के रूप में मिलता है।

5. **आश्रितजन हितलाभ** :– यदि रोजगार चोट या व्यावसायिक दुर्घटना के कारण बीमाकृत व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है तो उसके आश्रितों को आश्रितजन हितलाभ मिलता है। यह दैनिक वेतन के 90% की दर से मासिक भुगतान के रूप में अदा किया जाता है। बीमाकृत व्यक्ति के आश्रितों में उसकी विधवा पत्नी, विधवा माँ, बच्चे शामिल हैं। यह हितलाभ पुत्र को 25 वर्ष तक तथा पुत्री को अविवाहित रहने तक की अवस्था में मिलता है। यदि मृतक बीमाकृत व्यक्ति का उपर्युक्त श्रेणी में कोई परिवार का सदस्य मृत्यु के समय नहीं है तो आश्रित हितलाभ बीमाकृत व्यक्ति के आश्रित माता–पिता को भी मिल सकता है।

उपर्युक्त हितलाभों के अतिरिक्त निगम द्वारा कुछ अन्य हितलाभ भी कर्मचारियों को प्रदान किए जाते हैं जिनका विवरण इस प्रकार हैः–

क. **अंत्येष्टि खर्च** : बीमाकृत व्यक्ति का अंतिम संस्कार करने के लिए संबंधियों को रुपये 10,000/– तक का भुगतान किया जाता है।

ख. **प्रसूति खर्च** : बीमाकृत महिला या बीमाकृत व्यक्ति को उसकी पत्नी की प्रसूति ऐसे स्थान पर होने की स्थिति में जहाँ क. रा. बी. योजना के अंतर्गत आवश्यक चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध नहीं हैं, रुपये 5,000/– तक का भुगतान किया जाता है।

ग. **व्यावसायिक पुनर्वास भत्ता** : व्यावसायिक पुनर्वास केन्द्र में व्यावसायिक पुनर्वास प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे स्थायी अपंग बीमाकृत व्यक्ति को व्यावसायिक पुनर्वास भत्ता दिया जाता है।

घ. **पुनर्वास भत्ता** : बीमाकृत व्यक्तियों के शारीरिक निःशक्तता की स्थिति में कृत्रिम अंग केंद्र (Artificial Limb Centre) में कृत्रिम अंग लगाने या मरम्मत या बदलने के दौरान भत्ता दिया जाता है।

ङ. **बेरोजगारी भत्ता** : बेरोजगार भत्ता की यह योजना 01.04.2005 में आरम्भ की गई थी। तीन या अधिक वर्षों तक बीमाकृत रहने के बाद जो बीमाकृत व्यक्ति कारखाने/संस्थान के बंद होने, छँटनी होने या स्थायी अशक्तता के कारण बेरोजगार हो जाता है तो ऐसे कर्मचारी बेरोजगारी भत्ता के पात्र होंगे।

च. **मेडिकल/डेन्टल कॉलेज मे बीमाकृत व्यक्ति के बच्चों को दाखिला** : कर्मचारी राज्य बीमा निगम मेडिकल/डेन्टल कॉलेज में बीमाकृत व्यक्ति के बच्चे को पाँच प्रतिशत कोटा के तहत दाखिला दिया जाता है।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम की कल्याण भावना का द्योतक पंचदीप अपने अनेक हितलाभों की ज्योति से लाखों परिवारों में अपना प्रकाश बिखेर रहा है। विश्व की सबसे बड़ी सामाजिक सुरक्षा अपनी इन्हीं खूबियों के कारण धरोहर का रूप ले रही है। अपनी अस्मिता, संस्कृति, संस्कार लेकर श्रमिक वर्ग गाँव छोड़कर कारखानों में राष्ट्र का निर्माण करने में योगदान देता है। बीमारियों में, घायल होने पर, वह मायूस न हो जाएं, चिंतित न रहें, इसी पावन उद्देश्य को लेकर चिंता से मुक्ति की यह सामाजिक सुरक्षा श्रमिक की ढाल बन रही है। इसके अर्न्तगत श्रमिक वर्ग सुरक्षित है और योजना के सही संचालित होते रहने पर भविष्य में भी सुरक्षित रहेगा।

कविता परिचय

एक घरौंदा उगाती है गौरैया, तिनका–तिनका बो कर,
चूजों को दुनिया दिखाती है गौरैया, मेहनत से अंडों को सेकर
खुश हो गीत गाती है गौरैया, जाने क्या गाती है गौरैया
जाने क्यों गाती है, पर गीत गाती है गौरैया,
जीवन के इस गीत में, सृष्टि चक्र की रीत में,

रोज की भागदौड़ और स्पर्धा की जीत में, मिल जाए
प्रेम मन की मीत में, रिश्तों की गर्माई खोजते शीत में...

हर जगह गीत है, काव्य है, कविता है, छंद है, लय है, रस है – और जहाँ रस है वहाँ जीवन है, जहाँ जीवन है– वहाँ काव्य है – और वही एक चक्र। मानव जीवन के सुख–दुख, हँसी–खुशी, प्रेम–उमंग, व्रत– त्यौहार, पर्व– उत्सव सब में गीत है – जीवन एक काव्य है। काव्यमय हृदय तो कुछ लिख लेते हैं, कुछ गुनगुना भी लेते हैं, पर काव्य वहाँ भी है, जहाँ कोई कुछ कह न पाए।

क.रा.बी. निगम के हमारे कर्मियों ने भी जीवन के प्रति अपने काव्यमय भाव दिए हैं, उन भावों को समझें अन्यथा आइए पढ़ ही लें –

बावरा मन, बौराया मौसम

(श्याम कुमार)
उप निदेशक (राजभाषा)
उत्तरी अंचल

आज सुबह खिड़की खोली
तो अजब अहसास था।

मन हुआ था बावरा
पर दिल मेरे पास था।

उगता सूरज सब देखते हैं
मैंने डूबता चाँद देखा।

दिपदिपाते तारे देखे
और बावरा मन उदास हुआ।

दिल की खिड़की से
हवा का झोंका आया।

मानो सावन में कोई
पिया की पाती लाया।

बावरा मन फिर हुलसाया
थोड़ा सा हर्षाया।
मौसम वासंती बना
मन हुआ फागुनी।

फागुनी हवा सरसराई
मोड़ के पेड़ के

थोड़े पत्ते हिला गई
तन–मन महका गई।

आज सुबह खिड़की खोली
तो सब अजीब था, अच्छा था,

आज सुबह–सुबह ने
सुबह की सूरत दिखा दी।

सच कहूँ.................
बचपन की याद दिला दी।

खुश हूँ

जिंदगी है छोटी, हर पल में खुश हूँ।
काम में खुश हूँ, आराम में खुश हूँ।

आज पनीर नहीं, दाल में खुश हूँ।
आज गाड़ी नहीं, पैदल में खुश हूँ।

जिसको देख नहीं सकता, उसकी आवाज से ही खुश हूँ।
जिसको पा नहीं सकता, उसको सोच कर ही खुश हूँ।

बीता हुआ कल जा चुका है, उसकी मीठी याद में ही खुश हूँ।
आने वाले कल का पता नहीं, इंतजार में ही खुश हूँ।

हँसता हुआ बीत रहा है पल, आज में ही खुश हूँ।
जिंदगी है छोटी, हर पल में खुश हूँ।

अगर दिल को छुआ, तो जवाब देना
वरना बिना जवाब के भी खुश हूँ।

दविंदर कुमार,
सहायक

फागुनी हवा

उड़ती सी धूल,
और गुलाल लाल–लाल
बिछी पीली सरसों
और पकती सी गेहूँ बाल।

पनघट के नीम तले
बिखरी सी धूप छाँव
आएगा शायद कोई
कहे कागा की काँव–काँव।

मन सुबह–शाम हुआ
दुपहरी जलाने लगी
रातों की ठंडी हवा
उमंग–सी जगाने लगी।

चुनरी को ले–ले उड़े
गोरी फिर शरमाई है
अबके फागुनी हवा
फिर से बौराई है।

रामलाल
सहायक निदेशक
क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़

तुम
(एक पिता की कविता पुत्र के जन्म पर)

केदार सिंह
सहायक निदेशक

जीवन की रेत सी तपन में,
ठंडी बयार की छुअन में।
मुस्कराते से तुम आए,
भरी धूप में बदरा छाए।
चांद सा प्यारा मुखड़ा,
मन में हर्ष भरता।
हौले से तुम आए,
मन में मंगल गीत गाए।
जिस पिता से सीखा चलना,
जीवन में लंबे डग भरना।
थामने उनकी उंगली आए,
दादा को खुश करने आए।
मुझीको पापा कहने वाले,
प्यार मुझको करने वाले।
मेरा अस्तित्व बताने आए,
मेरे घर के आंगन आए।
मेरे जीवन को हर्षाए,
मेरे आंगन में तुम आए।

परख

जगदीश चन्द सुर्यवंशी
सहायक

आँसू बता देते हैं, दर्द कैसा है,
बेरूखी बता देती है, हमदर्द कैसा है,
घमण्ड बता देता है, कितना पैसा है,
संस्कार बता देते हैं, परिवार कैसा है,
बोली बता देती है, इंसान कैसा है,
बहस बता देती है, ज्ञान कितना है,
ठोकर बता देती है, ध्यान कितना है,
नजरें बता देती हैं, सूरत कैसी है,
स्पर्श बता देता है, नीयत कैसी है।

कमाई

हर्ष जिंदल उर्फ हातीफ
उच्च श्रेणी लिपिक

नए कपड़ों ने पुराना हो जाना है,
बड़ी गाड़ी भी छोटी लगने लगेगी,
कभी किसी ओर की खोली में झांककर देखो,
कितने अच्छे से कमाई रोटी पचने लगेगी,
देखना कैसे सुकून से भर जाएगा दिल,
जो कभी तुमने बहती अँखियाँ हँसाई होंगी,
इस जिन्दगी की इससे बड़ी क्या कमाई होगी,
के तुमने खुद से किसी और की जिंदगी सजाई होगी।

मन की भूख ही है जो कभी मिटती नहीं,
पेट तो जरूरतों से भी भर जाता है,
सब कुछ हकीकत हो ये जरूरी नहीं,
कुछ काम तो ख्वाईशों से भी चल जाता है,
क्या सिर्फ पैसा ही है कमाने के लिए,
कोई दुआ यहाँ क्यूँ कमाता नहीं,
उस खुदा के भी घर जाएँ हम अमीर बनकर,
कोई ऐसा हिसाब क्यूँ यहाँ कोई लगाता नहीं,
उसे रहम की गरमाहट सदा मिलती रहे,
जिसने कभी किसी ठिठुरते को उढ़ाई रजाई होगी,
इस जिन्दगी की इससे बड़ी क्या कमाई होगी,
के तुमने खुद से किसी और की जिंदगी सजाई होगी।

बड़े से महल होना कोई जरूरी नहीं,
अगर इंसान पूरा हो तो कमरा एक ही बहुत है,
कोई कितनी भी रिश्वत देके उसे खरीद ना पाया,
जिन्दगी की एक सच्चाई है जिसका नाम मौत है,
सब खुदा से मांग–मांग जमा करके,
पता नहीं आदमी गुरूर किस बात का करता है।
मकान कमरों से बनता होगा ज़रूर,
पर इंसान कर्मों से बनता है।
जितना इस जहाँ को सौंप के जाओगे तुम,
उतने ही आराम से तुम्हारी यहाँ से विदाई होगी।
इस जिन्दगी की इससे बड़ी क्या कमाई होगी,
के तुमने खुद से किसी और की जिंदगी सजाई होगी।

कार्मिकों द्वारा किए गए कामकाज की प्रतिशतता संबंधी प्रमाण पत्र शाखाधिकारी द्वारा प्रतिहस्ताक्षरित होना चाहिए।

अपना किरदार

अपनी–अपनी सोच है,
अपना–अपना है किरदार।
जिन्दगी की बढ़ रही,
चारों तरफ रफ्तार।
हर एक आदमी हो गया,
दूसरे से बढ़कर होशियार।
परेशानियाँ भी आ गईं,
दुनियाँ में बे–शुमार।
त्याग न कोई कर रहा,
कुर्बानी के लिए न तैयार।
देश को सब लूट रहे,
भर रहे, अपना घर–बार।
एक दूसरे से खींच रहे,
पैसे के लिए मारो–मार।
जिन्दगी की इस दौड़ में,
घूम रहे बहुत बीमार।

दलबारा सिंह
सहायक निदेशक(वसूली)

सुहाना सफर

लफ्जों की दहलीज पर,
घायल जुबान है,
कोई लड़ाई से तो कोई,
महफ़िल से परेशान है !

जिस–जिस ने मुहब्बत में,
अपने महबूब को खुदा कर दिया,
खुदा ने अपने वजूद को बचाने के लिए,
उनको जुदा कर दिया .... !

हारना तब आवश्यक हो जाता है
जब लड़ाई ''अपनों से होती है !
और जीतना तब आवश्यक हो जाता है,
जब लड़ाई ''अपने आप'' से होती है !

मंजिल मिले ये तो मुकद्दर की बात है,
हम कोशिश ही न करें, ये तो गलत बात है!

जगदीश कुमार
सहायक

जिन्दगी

हरविंदर सिंह
सहायक

ना जाने क्यों अजीब सी है ये जिन्दगी
एक पल में है कोई, तो दूसरे पल में कोई नहीं,

मैं तो हूँ यहाँ... पर मेरा मन है और कहीं
ना जाने क्यों अजीब सी है ये जिन्दगी।

हर पल–पल कुछ गंवाया तो दूसरे ही पल कुछ नया पाया
कभी कोई रूठा हमसे, तो कभी किसी ने हमें मनाया।

कभी ज़िन्दगी ने हमें रुलाया, तो कभी इसने हमें हँसाया।
ना जाने क्यों अजीब सी है ये ज़िदंगी।

बहुत से रिश्ते दिए ... इसने माँ की ममता, पिता का प्यार
दादी की कहानी तो दादा का दुलार,

कभी किसी ने अपनाया तो कभी किसी ने झटके से हाथ छुड़ाया।
ना जाने क्यों अजीब सी है ये जिंदगी

कभी ज़ोर से गिराया तो कभी हौसले से ऊपर उठाया।
कभी थोड़ा फीका सा तो कभी थोड़ा मीठा सा बनाया।

कभी परीक्षा में फेल तो कभी किसी परीक्षा में पास करवाया।
पर हर एक परीक्षा से इसने हमें बहुत कुछ सिखाया।

भले ही हुए कभी फेल पर हमेशा इसने ज्ञान का सागर बढ़ाया।
हर एक परिश्रम से कुछ नया ही सिखाया।

न जाने क्यूं अजीब सी है ज़िंदगी
एक पल में है कोई और दूसरे पल में कोई नहीं।
एक पल में है कोई और दूसरे पल में कोई नहीं।

डूबता सूरज....

अमित बहादुर
सहायक

इस कलयुगी दुनिया में, तुमने मुझे जन्म दिया था,
बोलना जब सीखा, तो पहला नाम माँ ही लिया था,
वैसे तो आसपास सब थे, पर तुम ही मेरी दुनिया थी,
खूब स्नेह से माँ, पाल–पोसकर मुझे बड़ा किया था,
आज अचानक खो गई हो तुम, इस दुनिया की भीड़ में,
नौकरी की खातिर, तुमने परिवार पीछे छोड़ दिया था,
अन–बन रोज़ होती थी आपकी पापा से,
शायद इसलिए उनसे अलग होने का फैसला लिया था,
सोचा नहीं कि इस अलगाव का मुझ पे क्या असर होगा,
इतना करती थी प्यार मुझसे, फिर माँ क्यों ऐसा किया था........

पढ़ाई का हवाला देकर, भेज दिया था मुझे छात्रावास में,
खुद शायद निकल गई तुम, तरक्की की तलाश में,
यहाँ आधी रात को डरकर, जब मैं सहम– सा जाता हूँ,
ढूंढ़ता हूँ आलिंगन तुम्हारा, पर साथ ना तुमको पाता हूँ,
सोचकर तुम्हें, अश्रु मेरे रातभर झर–झर बरसते हैं,
ये मेरे अभिलाषी नैन, तेरी दीद को तरसते हैं,
पिता भी मिले बस नाम के, जो सिर्फ पैसा कमाते हैं,
सबके परिवार वाले आते हैं मिलने, बस पापा ही नहीं आते हैं,
सज़ा दी थी ये मुझे या मुझसे बदला कोई लिया था,
इतना करती थी प्यार मुझसे, फिर माँ क्यों ऐसा किया था.......

स्कूल में बने हैं कुछ मित्र मेरे, पल भर मन बहल जाता है,
जब छुट्टी होती है स्कूल से, बस ख्याल तुम्हारा आता है,
यहाँ भोजनालय में, खाने के लिए चीज़ें तो कई हैं,
पर तुम्हारे हाथों का स्वाद इन खानों में नहीं है,
याद तुम्हारी आती है, तो उंगलियाँ फोन पर जाती हैं,
पर दूसरी ओर से मशीन आपका फोन बिज़ी बतलाती है,
मैं थक गया हूँ माँ यहाँ चारदीवारी (छात्रावास) में बंद होकर,
नहीं रहना चाहता एक पल भी माँ, तुमको यूं खोकर,
मैंने अपने आप को आज कमरे में बंद कर लिया था,
इतना करती थी प्यार मुझसे, फिर माँ क्यों ऐसा किया था.........

आपका यूं नजर अंदाज करना, मन में मेरे चुभ सा गया,
बैठे–बैठे आज अचानक, जाने दिल में मेरे क्या आ गया,
देने जा रहा हूँ जान अपनी, शायद अकेले से छुटकारा हो,
आज कोई लम्हा याद नहीं, जब प्यार से तुमने पुचकारा हो,
डर लग रहा है माँ, शायद इसमें पीड़ा काफी हो,
हाँ यह गलती होगी मेरी, पर इसमें तुम्हारी माफ़ी हो.........

एक पहेली छोड़कर जा रहा हूँ बूझ शायद ये जग जाए,
तब कहीं तुम्हें शायद अपनी गलती का अंदाजा लग पाए,
ज़िगर के टुकड़े ने क्या सोच के फंदा गले में लिया था,
इतना करती थी बेटे से प्यार, फिर क्यों मैंने ऐसा किया था.........

नहीं सोचा था कभी वार्डन के भरोसे छोड़कर चली जाओगी,
दीपक था तुम्हारा मैं, आज बुझ जाऊँ, तो फिर कैसे जलाओगी,
बचपन में मिलकर हम सब आँख मिचौली खेला करते थे,
छुप जाऊँगा अब ऐसे कि चाहकर भी ना मुझे ढूँढ पाओगी,
तुम्हें सज़ा नहीं दे रहा, दुहाई देता हूँ क्यों यहाँ जन्म लिया था,
वक्त मिले तो चिन्तन करना माँ कि क्यों तुमने ऐसा किया था।।

सभी लोगों से अपील -

''तरक्की की राह में, रिश्तों को इतना पीछे भी न छोडें,
कि जब पलट कर देखें तो खाली सड़कों के अलावा कुछ न दिखे''

माँ के लिए प्यार भरे चन्द शब्द

चन्द्र भूषण
अधीक्षक

लेती नहीं दवाई ''माँ'', जोड़े पाई–पाई ''माँ''।
दुःख थे पर्वत, राई ''माँ'', हारी नहीं लड़ाई ''माँ''।
इस दुनिया में सब मैले हैं, किस दुनिया से आई ''माँ''।
दुनिया के सब रिश्ते ठंडे, गरमागरम रजाई ''माँ''।
जब भी कोई रिश्ता उधड़े, करती है तुरपाई ''माँ''।
बाबू जी तनख्वाह लाये बस, लेकिन बरकत लाई ''माँ''।
बाबूजी थे सख्त मगर, मक्खन और मलाई ''माँ''।
बाबूजी के पाँव दबा कर सब तीरथ हो आई ''माँ''।
नाम सभी हैं गुड़ से मीठे, माँ जी, मैया, माई, ''माँ''।
सभी साड़ियाँ छीज गई थीं, मगर नहीं कह पाई ''माँ''।
घर में चूल्हे मत बाँटो रे, देती रही दुहाई ''माँ''।
बाबूजी बीमार पड़े जब, साथ–साथ मुरझाई ''माँ''।
रोती है लेकिन छुप–छुप कर, बड़े सब्र की जाई ''माँ''।
लड़ते–लड़ते, सहते–सहते, रह गई एक तिहाई ''माँ''।
बेटी रहे ससुराल में खुश, सब ज़ेवर दे आई ''माँ''।
''माँ'' से घर, घर लगता है, घर में घुली, समाई ''माँ''।
दर्द बड़ा हो या छोटा हो, याद हमेशा आई ''माँ''।
घर के शगुन सभी ''माँ'' से, है घर की शहनाई ''माँ''।
सभी पराये हो जाते हैं, होती नहीं पराई ''माँ''।

दोहे (संकलन)

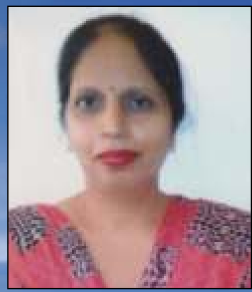

मधु गुप्ता
अधीक्षक

नमन करे अवतार को, कोई चरण दबाय ।
नाथ हाथ सिर पर रखें, प्रेम दया दिखलाय ।।

चित्त सदा ही शुद्ध हो, बुरे न लाय विचार ।
नहीं होंय भयभीत फिर, घूमें सब संसार ।।

मानव मन चंचल रहे, अंकुश उस पर होय ।
इन्द्रिय सब बस में रहें, कोशिश ऐसी होय ।।

इन्द्रिय सुख को छोड़ दें, उन पर कसें लगाम ।
अंकुश होय विवेक का, मन में सांई राम ।।

विषय वस्तु सबसे बुरी, इनको दूर भगायें ।
केवल भगवत नाम को, अपने गले लगायें ।।

ध्यानी बनकर ध्यान करें, साधन करें हजार ।
जब तक सद्गुरु कृपा नहिं सब कुछ है बेकार ।।

लाख करें हम साधना, ध्यान लगाते जायें ।
बिना कृपा श्री नाथ की, ध्येय नहीं मिल पाय ।।

मेरा मन अति कलुश भरा है, नाथ हृदय अति दया भरा है ।
कृपा दृष्टि से निर्मल कर दो, झोली मेरी प्रभुवर भर दो ।।

प्रथम बार दोहे लिखे, दोहे लिखे हजार ।
इनमें गलती होय तो, क्षमा करें करतार ।।

मैं औरत हूँ

कृष्णा कुमारी
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

देखते ही हर औरत को, जताते हो तुम अधिकार।
मैं भरी हुई हूँ ममता से, समझना मत मुझे लाचार।
भरे हो तुम वासनाओं से, छलक रहा अहंकार।
पड़ गया पर्दा अक्ल पर, छाया घोर अंधकार।
पन्ना–पन्ना लहू से रंगा है, भरा तेरी करतूतों से अखबार।
शैतानी की सूरत तो देखो, जग जननी का ही व्यापार।
अब भी समय है सम्भल जा, मिला है मौका बारम्बार।
मैं हूँ सृष्टि की रचयिता, बंद कर दे तू अत्याचार।
मैं औरत हूँ इतना समझ ले, समझना मत मुझे लाचार।

एक सैनिक का जज़्बा

हमें मत छुट्टी दो
मत भत्ता दो,
बस काम यही अब करने दो
वेतन आधा कर दो,
लेकिन कुत्तों में गोली भरने दो।

जय जवान, जय किसान
यह नारा सिर के पार गया
इक दो कौड़ी का जेहादी
सैनिक को थप्पड़ मार गया।

थप्पड़ खायें गद्दारों के
हम इतने भी मजबूर नहीं,
हम भारत माँ के सैनिक हैं
कोई बंधुआ मज़दूर नहीं।

अब और नहीं लाचार करो,
हम जीते जी मर जाएंगे,
दर्पण में देख न पाएंगे
निज वर्दी पर शर्माएंगे।

आर–पार का काम करो
सेना को दो जिम्मेदारी,
भारत का आँचल स्वच्छ रहे,
यही है हम सब की जिम्मेदारी।

प्रेम वल्लभ
निम्न श्रेणी लिपिक

अंत

सब कुछ जानते हुए
जान बूझ कर
अपने फर्जों से
मुख मोड़ कर
छुप के नहीं
बल्कि सरेआम
दिशाहीन चल के
सांपों के नहीं
मनुष्यों के सिरों पर
पैर रखकर
अपनी औकात से
बड़े सपनों की
पूर्ति के लिए
लोग अक्सर
कर जाते हैं
छोटी नहीं

बल्कि
बड़ी–बड़ी
गलतियाँ
जिन्हें मनुष्य ही नहीं
बल्कि
परमात्मा भी कभी
माफ नहीं करता
और फिर
गलतियाँ करने
वाले के
अंत के बाद ही
होता है
इन गलतियों का
अंत
नहीं बल्कि
सम्पूर्ण अंत....

सविंदर सिंह भट्टी
रेड़ियोग्राफर

मूल हिंदी टिप्पण आलेखन योजना के अंतर्गत कुल दस पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं।

तुम्हारा सहारा

लक्ष्मी नारायण मीणा
सहायक निदेशक

कोरे सादे कागज से–दिल पर,
शब्दों की इबारत लिखकर,
इक नाम सहसा चमका,
मानों अमावस में चाँद निकला,
केशों सी काली रात में उजली,
कड़कती कौंधती गरजती बिजली,
मुझे सहमाती है, डराती है,
तुम्हारे सहारे की याद दिलाती है,
और गहरे सागर से डरकर,
दूर किनारे से परे हटकर,
झेलकर संघर्षों की धूप–छाँव,
बनाई है उम्मीदों की नाव,
सागर से पार जाना चाहता हूँ,
थाम लो उंगली कहे जाता हूँ,
तुम्हारा संबल, तुम्हारा सहारा,
तुम्हारा...... प्यार पाना चाहता हूँ।

प्रथम पुरस्कारों की कुल संख्या दो होती है। प्रत्येक प्रथम पुरस्कार के लिए प्रोत्साहन राशि रु 5000/– है।

हास्य व्यंग्य

इतना दर्द दिया है जिंदगी ने,
कि रो–रो पड़ा हूँ
हँसने की जब–जब कोशिश की,
देखा, मुस्काना तक भूल गया हूँ।

जीवन की भाग–दौड़, दुख, तनाव, लड़ाई–झगड़ों में इंसान जीना भूल गया है। हास्य की तो बात करना ही बेकार है। हालांकि सभी मानते है कि जीवन में हास्य का बहुत महत्वपूर्ण योगदान है।

ऐसा ही कुछ योगदान हमारे निगम कर्मियों ने भी किया है। आइए उनके साथ मुस्कुरा ही लें...

द्वितीय पुरस्कारों की कुल संख्या तीन है एवं प्रत्येक के लिए प्रोत्साहन राशि रु 3000/– होती है।

हंसगुल्ले

संजीव कुमार
सहायक

बालक अपने पड़ोस में जाता है

और दरवाजे की घंटी बजाता है।

महिला दरवाजा खोलती है।

महिला – बेटा क्या हुआ ?

बालक – आंटी मम्मी ने एक कटोरी चीनी मंगाई है

महिला (मुस्कुरा कर उसका सिर सहलाते हुए कहती है)–

"अच्छा और क्या कहा है तेरी मम्मी ने?

बालक – "कहा है कि ...... अगर वो डायन न दे तो

सामने वाली चुड़ैल से ले आना ...."

संजना तीसरी बार ड्राइविंग लाइसेंस का इंटरव्यू देने पहुँची

ऑफीसर – अगर एक तरफ आपके पति हों और दूसरी तरफ आपका भाई हो तो आप किसे टक्कर मारोगी ?

संजना – पति को।

ऑफीसर – अरे मैडम! आपको तीसरी बार बता रहा हूँ कि आप ब्रेक मारोगी ...., ब्रेक....

लड़का : तुम्हारा नाम क्या है?

लड़की : SILENT LADY

लड़का : ये कैसा नाम है

लड़की (शर्माते हुए) :

हिन्दी में ...... "शांती बाई"!!

एक छात्र ने गणित के अध्यापक से कहा – सर! अंग्रेजी के अध्यापक तो अंग्रेजी में बातें करते हैं। आप भी गणित में बात क्यों नहीं करते?

गणित अध्यापक – ज्यादा तीन–पाँच न कर। फौरन नौ–दो ग्यारह हो जा। नहीं तो चार–पाँच रख दूँगा तो छटी का दूध याद आ जाएगा।

डॉक्टर – आपके तीन दाँत कैसे टूट गए ?

मरीज – पत्नी ने कड़क रोटी बनाई थी।

डॉक्टर – तो खाने से इन्कार कर देते!

मरीज – जी, वही तो किया था!!

यात्री ने ट्रेन से उतरते ही,

पप्पू से पूछा – "यह कौन–सा स्टेशन है ?"

पप्पू हंसा और जोर–जोर से हंसा,

हंसते–हंसते लोट पोट हो गया ....

और बड़ी मुश्किल से अपने आपको

संभालते हुए बोला "पगले, ये रेलवे स्टेशन है .... !"

दुकानदार: मैंने आपको दुकान की एक–एक चप्पल दिखा दी, अब तो एक भी बाकी नहीं हैं।

महिला: वो सामने वाले डिब्बे में क्या है?

दुकानदार: बहन, रहम कर थोड़ा, उसमें मेरा लंच है।

हरियाणे का नजारा

राजेश शर्मा
सहायक निदेशक

म्हारे हरियाणे मैं योहे नजारा हो सै।
ब्याह में साग पूरी का, दूध देण मैं झोटी बूरी का–2
अर लड़ाई मैं भरपाई अंगूरी का मजा ए न्यारा हो सै।
म्हारै हरियाणे मैं योहे नजारा हो सै।

ताते पाणी मैं पां धोण का, कटठे होकै ईख बोण का–2
अर ठाडू– ठाडू रोण का, मजा ए न्यारा हो सै।
म्हारै हरियाणे मैं योहे नजारा हो सै।

दूध दही ओर सीत का, छोरियां के गीत का–2
अर ताशां खेलदी हाणा बूढयां की जीत का, मजा ए न्यारा हो सै।
म्हारै हरियाणे मैं योहे नजारा हो सै।

धुंध मैं आग का, बथुए के साग का–2
अर गार माटी के फाग का, मजा ए न्यारा हो सै।
म्हारै हरियाणे मैं योहे नजार हो सै।

बग्गी झोट्टा चलाण का, जोहड़ के मैं नहाण का–2
अर ताता–ताता गुड़ खाण का, मजा ए न्यारा हो सै।
म्हारै हरियाणे मैं योहे नजारा हो सै।

सरसम के खेत का, टीले पै बालू रेत का–2
अर जांदी होड़ जनेत का, मजा ए न्यारा हो सै।
म्हारै हरियाणे मैं योहे नजारा हो सै।

गोडे तै गण्डा तोड़ण का, भजा कै टैक्टर माड़ण का–2
अर जोहड़ मैं सांझी फोड़ण का, मजा ए न्यारा हो सै।
म्हारै हरियाणे मैं योहे नजारा हो सै।

कुण्डी मैं सोटा रगड़ण का, मास्टर आगै अकडण का–2
अर भाज कै बस पकड़ण का, मजा ए न्यारा हो सै।
म्हारै हरियाणे मैं योहे नजारा हो सै।

बकरा

संदीप कुमार साँगवान
सहायक

क्या बकरा कसाई की घास खा सकता है, बली का बकरा, बकरे की माँ कब तक खैर मनाएगी ये सभी आज के मनुष्य की परिस्थितियाँ हैं जिसमें संबोधन का केन्द्र बकरा है।

हम यह जानने का प्रयास करते हैं कि इन सब कहावतों का नायक वास्तव में बकरा है या मनुष्य? हमें इतिहास से इस विषय में कोई मदद नहीं मिलती क्योंकि न ही भारत के किसी इतिहासकार ने किसी खण्ड में और न ही पुराणों में (मेरी जानकारी के अनुसार) बकरे के विषय में कोई वर्णन किया है तथा न ही बकरे को किसी देवता ने अपने वाहन के रूप में स्वीकार किया है। कुल मिला कर बकरा एक बदकिस्मत प्राणी है जिसके नाम का प्रयोग मनुष्य द्वारा अपनी स्वयं की विकट परिस्थितियों को संज्ञा देने के लिए किया गया है। क्या मनुष्य और बकरे का संबंध केवल पाचन तंत्र तक ही है ?

बकरे के जीवन दर्शन का ज्ञान प्राप्त करने के लिए बकरे के चरित्र की व उसके विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिए अनुसंधान करने की आवश्यकता है। बकरा एक औसत कद का एक निर्बल प्राणी है जिसे प्रकृति द्वारा न तो आत्मरक्षा के नाम पर कुछ विशेष दिया गया है न ही प्रकृति द्वारा सुंदरता के नाम पर कुछ दिया गया जिसका किसी अन्य जीव के साथ तुलनात्मक विश्लेषण किया जा सके।

सूचना क्रांति के इस युग में सूचनाओं का ढेर आम जनमानस के चारों तरफ उसी प्रकार लगा पड़ा है जिस प्रकार बकरे के चारों ओर घास–फूस का ढेर लगा रहता है, परन्तु वह ऐसे भावहीन हो कर खड़ा है जैसे भावहीन होकर एक बकरा घास चरता रहता हैं। इस युग में उदारवाद व संकीर्णता के संघर्ष में, उसे समझ में नहीं आ रहा कि इसमें से उसके लिए क्या महत्त्वपूर्ण है, अर्थपूर्ण है और क्या अर्थहीन है? सिद्धांत और व्याहारिकता दोनों के इस द्वंद्व में साधारण इंसान एक बकरे के समान भावहीन खड़ा बस इस बात की आशा करता है कि शायद जीवन रूपी तराजू के दोनों पक्ष सिद्धान्त और व्याहारिकता कभी एक समान हों, जिससे उसे आत्मसंतोष हो सके कि जीवन में उसे प्राप्त संस्कारों व जीवन की ऊँची नीची पगडंडियों पर चलते हुए जीवन संघर्ष में उसके द्वारा अर्जित ज्ञान को एक सम्मानजनक मूल्यांकन प्राप्त हो, जो कि वर्तमान समय में एक कल्पना ही लगता है।

क्या बकरा कसाई की घास खा सकता है? यह भी एक महत्वपूर्ण प्रश्न है जो बौद्धिक बहस का विषय हो सकता है। बेचारा बकरा जिसको प्रकृति द्वारा शाकाहारी प्राणी बनाया गया है, घास खाना तो उसका जन्मसिद्ध अधिकार है और घास खाने के अतिरिक्त उसके पास कोई अन्य विकल्प भी नहीं है, इसके अतिरिक्त घास एक प्राकृतिक संसाधन है जिस पर प्रथम अधिकार तो शाकाहारी का होना चाहिए।

यहाँ पर भी लड़ाई बकरे और घास पर अधिकार की नहीं है, अपितु प्रश्न समानता के अधिकार और उसके अनुपालन का है। प्रश्न ताकतवर और कमजोर, साधनवान और साधनहीन के बीच समानता के अधिकार का है।

वास्तव में, मनुष्य में दूसरे मनुष्य पर शासन करने की इच्छा चिरकाल से रही है। सरल शब्दों में एक मनुष्य द्वारा दूसरे मनुष्य का शोषण करना भी एक वास्तविक सत्य है, वह चाहे इस रूप में हो या उस रूप में । अपनी इस भावना को मानवीय चेहरा देने के लिए मनुष्य द्वारा बकरे शब्द को बलि का बकरा बनाया गया है .... बेचारा बकरा।

कहानी परिचय

बचपन के दिन याद आते हैं – एक राजा था..., एक शेर था..., एक खरगोश था..., एक बंदर था, ..., एक राक्षस था...... एक परी थी .....

और फिर याद है – ''बचपन के दिन भी क्या दिन थे ...... ?

कहानी छोटे बच्चों की हो, किशोरों की हो, बड़ों की हो या बूढ़ों की, कहानी तो कहानी ही होती है। राजा होता है, रानी होती है, नायक होता है, नायिका होती है, खलनायक होता है, कहानी चलती रहती है। फिर सुखांत या दुखांत या कभी प्रश्न छोड़कर कहानी समाप्त। हर कहानी लिखने के पीछे भी एक कहानी होती है। इसी कही कहानी, कुछ न कही कहानी के बीच संवाद हो जाते हैं और जीवन ही कहानी बन जाता है।

इस ताने– बाने को छोड़कर आइए चलते हैं कुछ कथाओं की दुनिया में जहाँ हमारे निगम कर्मियों की कहानियाँ हैं। आइए पढ़ तो लें .....

वर्ष भर में न्यूनतम 100 श्रुतलेखन देने वाले सभी अधिकारी (कार्यालय प्रमुख सहित) हिंदी श्रुतलेखन (डिक्टेशन) प्रतियोगिता में हिस्सा लेने के लिए पात्र हैं।

प्रेम का मान

(श्याम कुमार)
उप निदेशक (राजभाषा)
उत्तरी अंचल

शहर से दूर और एक छोटे से ग्राम में हरियाली से भरे खेतों के कोने में एक फूस की झोपड़ी में मिट्टी का दीप प्रज्वलित था। उसके धुंधले प्रकाश और धूम्र की उठती सीधी पंक्ति फूस को और काला करती चल रही थी, मानो रात्रि की कालिमा से होड़ करती हो कि कौन अधिक कालिमायुक्त है। तारों से खचित आकाश मानो काले वस्त्र पर श्वेत, नील मुक्ता जड़ दिए हों। चंदन के वृक्षों को छूकर आती मंद सुगंधित हवा शीतलता प्रदान कर रही थी। ऐसे अधंकार में शिकार की खोज में राह भूला चारु राज्य नरेश का पुत्र राजकुमार कुमार दत्त थकान, प्यास से आकुल फूस के छोटे से आश्रय के द्वार पर दस्तक देता है। भीतर से एक हीरे की खनक सी पतली और मधु घुली मिश्रित ध्वनि आई– "कौन? मैं– राजकुमार दत्त। क्या जल मिलेगा?"

द्वार खुला। कुमार दत्त झोपड़ी के भीतर गया। एक लोटा जल पीने को मिला। तृष्णा शांत हुई। लोटा लौटाते समय कुमार दत्त ने उस अंधकार के भीतर मटमैले प्रकाश में युवती की कलाई देखी और चौंक पड़ा "यह चूड़ामणि, –क्या– ध्रुपद नरेश की पुत्री सागरिका?" –नहीं। "हाँ, मैं सागरिका, कुमार दत्त। तुम्हारा दिया कंगन जो मुझे स्मरण दिलाता है कि मेरे पिता, मेरा राज्य, मेरा सर्वस्व नष्ट करने वाला शान देश का नरेश अभी जीवित है और मैं प्रतिशोध में इस दीपक सी जल रही हूँ।"

"पर सागरिका! मैं, मेरा राज्य, मेरा पिता, मेरी सेना सब तुम्हारे राज्य की सहायतार्थ प्रस्तुत हैं। तुमने बताया नहीं कि आक्रमण कब हुआ। जब तक हम पहुँचे, सब नष्ट हो चुका था और तुम सागरिका! मेरा प्रेम छोड़कर मुझे छोड़कर इस ग्राम के बाहर?" "तुम्हें कहाँ–कहाँ नहीं खोजा मैंने और आज इस प्रांतर में, एक राजकुमारी इस हाल में। धिक्कार है– कुमार दत्त को! जो रानी होती वह आज कैसे जीवन यापन कर रही है।"

सागरिका ने रुँधे कंठ से कहा, "राजकुमार प्रतिशोध मेरा है। मेरा राज्य नष्ट हुआ और तुम तो मात्र प्रेम की मधुर गूंज में मग्न थे। और फिर विवाह पूर्व मेरा तुमसे कोई अधिकार नहीं था कि कुछ मांग सकती।"

"इस वन प्रांतर में, ग्राम में सेना जुटा रही हूँ। युद्ध सिखा रही हूँ। यदि जीवित रही तो मंगल परिणय अन्यथा देव फिर मिलाएंगे। कुमार दत्त अभिभूत हुआ कुछ कह पाता इसके पूर्व सागरिका ने उसे कह दिया–जाओ कुमार यह प्रेम का धागा मुझे मेरी राह से भटका देगा। "क्या रात्रि का विश्राम भी नहीं?" कुमार ने पूछा। "नहीं।" कुमार लौट चला। साथ में गुप्त रूप से राजकुमारी के कार्यों की टोह लेता रहा। वर्षा बीत चुकी थी। नदियाँ जल से लबालब थीं। और एक अमावस की रात में सागरिका की सेना ने जल मार्ग से अपने शत्रु पर प्रचण्ड आक्रमण किया। अपनी शक्ति के नशे में चूर शत्रु सेना वर्षा की समाप्ति पर बेखबर थी। उस पर मदिरा का प्रभाव। शत्रु सेना तितर–बितर हो गई।

प्रभात का सूर्य सुनहरी किरणों का जाल फेंक रहा था। राजकुमार को गुप्त सूचना मिली कि सागरिका रात्रि में आक्रमण कर, विजय होकर सागर लहरों पर मंथर गति से चलते यान से अपने किले की ओर लौट रही है। अत्यधिक घायल है। कुमार दत्त तुरत प्रस्थान को उद्यत हुआ परंतु भीतर का अभिमान– मान जागृत हो उठा। इतना अधीर क्यों। प्रेम एक परीक्षा है, तप है। जब राजकुमारी ने मान मर्यादा का पालन किया, राज्य दासता से मुक्त किया फिर क्यों दास की भांति याचना करना कि अब तो परिणय सूत्र बांधो। कुमार दत्त ठहर गया। शीतकाल प्रारंभ हो चला था। एक प्रातः सागरिका के गणों ने सूचना दी कि वह राजकुमार कुमार दत्त से भेंट को उद्यत है और वह विजयी हो चुकी है। और फिर सुनहरी किरणों से भरी एक प्रातः बेला में मंगल परिणय हुआ।

कुमार दत्त सागर सा गंभीर होकर भी प्रेम की परीक्षा में द्वितीय ही रहा। वह चाहकर भी सागरिका की सहायता नहीं कर पाया। सागरिका दो–दो राज्यों की रानी बनी और एक चांदनी रात में दोनों उसी पर्ण कुटी में पुनः मिले जहां उनके प्रेम का साक्षी चाँद था।

तृप्ती दीक्षित
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

चेहरा

आधी रात को रोज की तरह आज भी नशे में धुत वो गली की तरफ मुड़ा। पोस्ट लाइट के मध्यम उजाले में सहमी–सी लड़की पर जैसे ही नजर पड़ी, वह ठिठका।

लड़की शायद उजाले की चाह में पोस्ट लाइट के खंभे से लगभग चिपकी हुई सी थी।

करीब जाकर कुछ पूछने ही वाला था कि उसने उंगली से अपने दाहिने तरफ इशारा किया। उसकी नजर वहाँ घूमी।

चार लड़के उसे घूर रहे थे। उनमें से एक को वो जानता था। लड़का नजरें मिलते ही झेंप गया। अब चारों जा चुके थे।

लड़की अब उससे भी सशंकित हो उठी थी, लेकिन उसकी अधेड़ावस्था के कारण विश्वास.. .. या

अविश्वास..... शायद।

"तुम इतनी रात को यहाँ कैसे और क्यों,?"

"मैं अनाथाश्रम से भाग आई हूँ। वो लोग मुझे आज रात के लिए कहीं भेजने वाले थे" दबी जुबान से बड़ी मुश्किल से कह पाई।

"क्या .... । अब कहाँ जाओगी?"

"नहीं मालूम।"

"मेरे घर चलोगी"

"................ ।"

"अब आखिरी बार पूछता हूँ, मेरे घर चलोगी हमेशा के लिए।"

"जी"........ मोतियों सी लड़ी गालों पर उभर आई। घने अँधेरे से घबराई हुई थी।

उसने झट लड़की का हाथ कसकर थामा और तेज कदमों से लगभग घसीटते हुए घर की तरफ बढ़ चला। नशा अब उतर चुका था।

कुंडी खटकाने की भी जरूरत नहीं पड़ी थी। उसके आने भर की आहट से दरवाजा खुल चुका था। वो भोंचक्की सी खड़ी रही।

"ये लो, सम्भालो इसे! बेटी लेकर आया हूँ हमारे लिए। अब हम बाँझ नहीं कहलाएंगे।"

कठपुतली एक विधा नहीं बल्कि हमारी परम्परा को दिखाने वाली असली कहानियाँ होती थी जो मंच पर पुतली के माध्यम से जीवित हो उठती थी। धीमें–धीमें यह परम्परा समाप्त हो रही है पर जीवित है। मैंने हैदराबाद में इस विधा को सीखा है और इसे मंच पर सजीव भी किया है, उसी का लिखित रूप नीचे प्रस्तुत हैः–

श्री राजेश शर्मा
सहायक निदेशक

खरगोश की चतुराई

सूत्रधार – मोनू आओ, सोनू आओ
(गाते हुए) सब बच्चों को साथ में लाओ।
चंपक वन की एक कहानी,
तुम भी सुन लो आकर रानी।
बहुत बड़ा एक चंपक वन था
उसका राजा शेरसिंह था।
(शेरसिंह की दहाड़)
था राजा पर दुष्ट बड़ा था, अपनी ही ज़िद पर अड़ा हुआ था।
मैं राजा हूँ, मेरा है वन, करूं वही, जो कहे मेरा मन।
भूख सताए दौड़ के जाऊँ,
आठ– दस को मार गिराऊँ।
सूत्रधार– जंगल में आतंक था छाया,
(गाते हुए) दूर– दूर तक भय का साया।
संकट की जब घड़ी ये आई,
सब ने मिलकर सभा बुलाई।
(सभा का दृश्य)
हाथी– देखो! मिलकर सुन लो भाई,

दोनों हिंदी भाषी एवं अहिंदी भाषी क्षेत्र के लिए 1–1 प्रोत्साहन पुरस्कार का प्रावधान है।

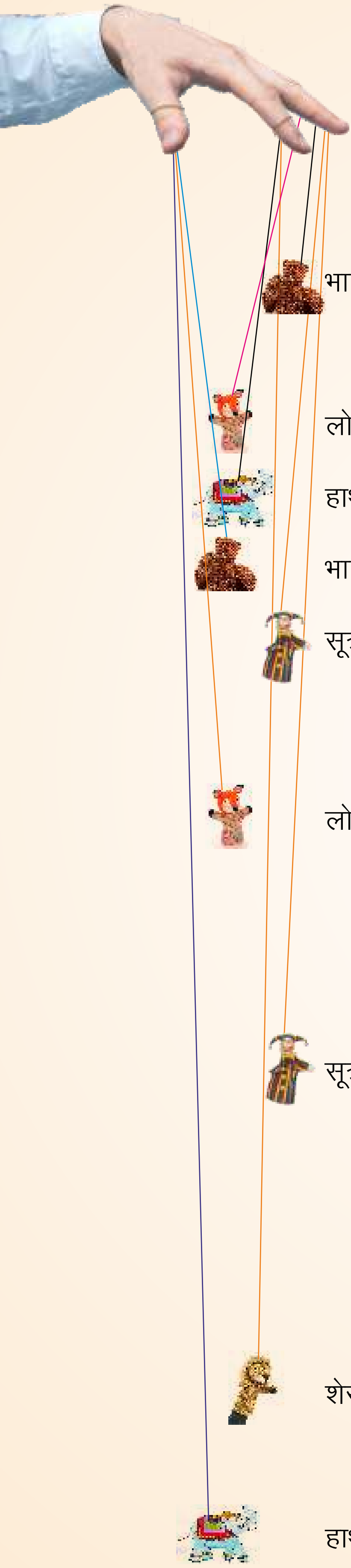

जंगल पर विपदा है आई।
शेरसिंह को समझ न आए,
मारे दस, और एक को खाए।
भालू– मैं भालू भी हूँ परेशान,
शेरसिंह भी हुआ इन्सान।
बात न इतनी समझ वो पाए,
जंगल यूँ खाली हो जाए।
लोमड़ी– लोमड़ी हूँ, चिंता है मन में,
कौन बचेगा, यूँ जंगल में।
हाथी– समाधान तो करना होगा,
शेरसिंह को रोकना होगा।
भालू– सभा हुई है, मिलकर सोचो,
किसी तरह दुश्मन को रोको।
सूत्रधार (गाकर)
सबने मिलकर अक्ल दौड़ाई,
समझ किसी को कुछ न आई।
सोच– सोचकर सब जब हारे,
चतुर लोमड़ी ओर निहारे।
लोमड़ी– (चिंतित स्वर में)
शेरसिंह बलवान बड़ा है,
झगड़े में नुकसान बड़ा है।
राह नहीं कोई दूजी है,
बात यही बस सूझी है।
मिलकर समझौता कर लेवें,
रोज जानवर खाने को देवें।
सूत्रधार– (गाकर)
देखो कैसी मुश्किल छाई,
सबको बात समझ में आई।
सबने मिलकर कदम बढ़ाया,
शेरसिंह का द्वार बजाया।
(खट–खट–खट–खट–खट)
शेरसिंह जब लगे गुर्राने,
कांपा तन–मन, लगे कपानें।
(ऊ ह ह ह ह – – – –)
शेरसिंह– (दहाड़कर)
ऐसा क्या भूचाल है आया,
सारा जंगल दौड़ा आया।
(सभी जानवर डरकर चुप हो जाते हैं। कांपने लगते हैं।)
हाथी– (विनयपूर्वक)

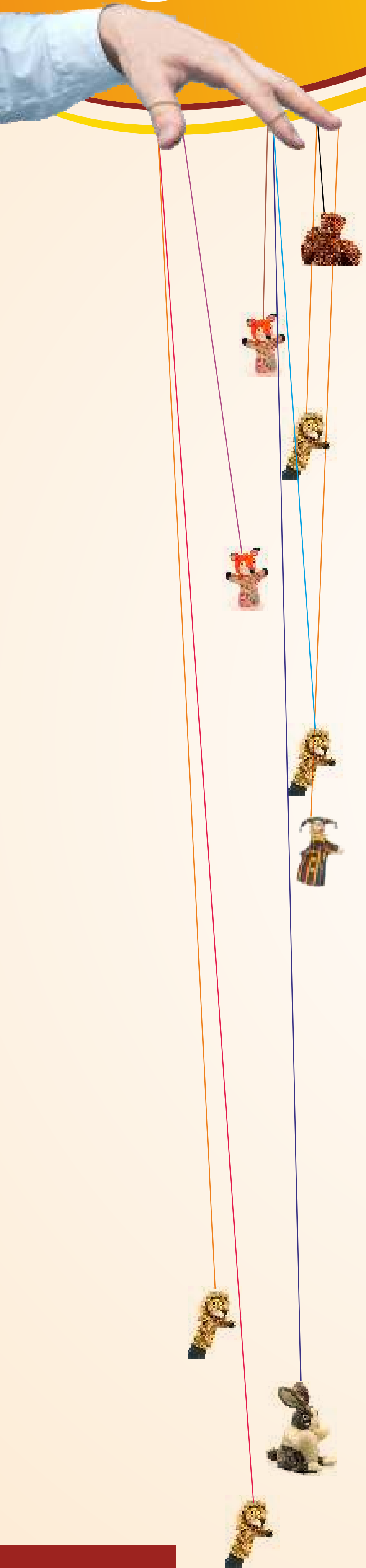

दो आज्ञा! तो हम फरमाएँ,
अरज करन को द्वार पे आएँ।

भालू– (चापलूसीपूर्वक)
आप बली हैं, आप महान,
रहो दयालु, हे दयावान!

लोमड़ी–
सबको जीने का अधिकार,
दया करो हम पर सरकार।

शेर– (गुस्से में दहाड़कर)
दया करूँ! ....
दया करूँ! मैं क्या खाऊँगा,
ऐसे भूखा, मर जाऊँगा।

लोमड़ी (विनयपूर्वक समझाते हुए प्रस्ताव रखती है)
रोज पशु एक भेंट चढ़ेगा,
द्वार आपके स्वयं चढ़ेगा।
उसको खाकर भूख मिटाना,
पाँव पसारकर फिर सो जाना।

शेरसिंह (शेरसिंह अपनी सहमति देता है)
ठीक है।

सूत्रधार–
शेर को बात समझ में आई,
जानवरों ने राहत पाई।
एक जानवर नियम से जाता,
शेरसिंह की भूख मिटाता।
(कुछ सोचकर) पर कब तक ये नियम चलेगा,
शेरसिंह का जुल्म रहेगा।

खामोशी के बाद
फिर खरगोश की बारी आई,
समझ–बूझ तरकीब लड़ाई।
शेरसिंह को बड़ा सताया,
जानबूझकर देर से आया।

शेरसिंह– (गुस्से में दहाड़ते हुए)
कौन है तू क्यों देर से आया,
क्या तू मुझसे न घबराया।

खरगोश– (सहमकर)
महाराज .... महाराज मजबूर बड़ा था,
राह में दूजा शेर खड़ा था।

शेरसिंह– (और अधिक गुस्से में) दूजा शेर?

दूजा शेर कहाँ से आया,
कैसा ये समाचार तू लाया।
कहाँ मिला, मुझको बतलाओ,
मुझको उसके पास ले जाओ।
(खरगोश शेर को साथ ले चल पड़ता है)
सूत्रधार– (गाते हुए)
खरगोश की बुद्धि, काम में आई,
जा कुएँ में, छवि दिखाई।
खरगोश– (कुएँ पर ले जाकर)
ये कुआँ है शेर यहीं है,
आपका दुश्मन एक यहीं है।
इसी जगह पर वो रहता है,
खुद को राजा वो कहता है।
शेरसिंह– (कुएँ में झाँककर)
कौन है तू – कौन है तू (प्रतिध्वनि)
मैं राजा हूँ – मैं राजा हूँ (प्रतिध्वनि)
नहीं मैं राजा हूँ – नहीं मैं राजा हूँ (प्रतिध्वनि)
दहाड़ – दहाड़ (प्रतिध्वनि)
शेरसिंह (गुस्से में)
अभी कुएँ में छलाँग लगाऊँ,
अक्ल ठिकाने तेरी लाऊँ।
(शेर अपनी छवि को दूजा शेर समझकर कुएं में छलाँग लगा देता है और डूबकर मर जाता है।)
सूत्रधार–
शेरसिंह को समझ न आया,
गुस्से में था वो पगलाया।
समझ छवि को दूजा शेर,
कुएँ में कूदा, हो गया ढेर।
(सभी जानवर खुशी मनाते हुए नाचते और गाते हैं)
बुद्धि ने ताकत को हराया,
शेरसिंह को मार गिराया। –3
सूत्रधार–
बिन सोचे जो काम करेगा,
ऐसे ही वो पछताएगा। –2
संकट में जो धीर धरेगा,
वही विजेता कहलाएगा। –3

विचार अमृत

भारत दर्शन में दुनिया का गुरु रहा है। ऋषियों, मुनियों, संतों की दृष्टि में संसार सारहीन है, सारवान भी, त्याज्य भी है और ग्राह्य भी है। संतों की भारत भूमि को नमन और गर्व भी। हम इसी भारत की संतान हैं। भारतीय जन–मानस भी बुद्धिमान और विचारवान है। इन्हीं विचारों से निकले धर्म, दर्शन, विचार, प्रवचन, आदर्श...... आदि समाज को आलोकित करते हैं, उनका पथ प्रदर्शित करते हैं।

क.रा.बी. निगम के हमारे कर्मियों ने भी अपनी लेखनी से विचार उकेरे हैं .. आइए देखें, किस सीपी से कैसा मोती निकलता है....

मिलावट का कहर

अश्वनी कुमार,
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

अधमाः धनमिच्छन्ति धनं मानं च मध्यमाः ।
उत्तमाः मानमिच्छन्ति मानो हि महताम् ।।

अर्थात् निम्न कोटि के लोगों को सिर्फ धन की इच्छा होती है, ऐसे लोगों को सम्मान से मतलब नहीं होता। एक मध्यम कोटि का व्यक्ति धन और सम्मान दोनों की इच्छा रखता है। वहीं एक उच्च कोटि के मनुष्य के लिए सम्मान ही सबसे बड़ा धन होता है। ऐसे व्यक्ति के लिए सम्मान धन से कहीं अधिक बड़ा होता है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो धन अर्जन ही आज हमारा मुख्य लक्ष्य बन गया है। सम्मान को तो आज धन के तराजू में ही तौला जाता है। लेकिन दौलत की इस होड़ में मनुष्य स्वयं का ही दुश्मन बन बैठा है। प्रकृति से दूर होता जा रहा है। अपनों से दूर होता जा रहा है। प्रगति और विकास के नाम पर प्राकृतिक वस्तुओं से छेड़खानी कर उनके मूल स्वरूप को ही विकृत कर रहा है। मनुष्य ने न तो नदियों का जल /भू–जल ही शुद्ध छोड़ा है और अधिक पैदावार के नाम पर न ही खाद्यान्न (अन्न, फल व सब्जियाँ) को शुद्ध छोड़ा है। धन अर्जन के चक्कर में खाद्यान्नों (अन्न, फल व सब्जियों) पर रसायनों का अंधाधुंध प्रयोग विशेषकर फल व सब्जियों को टीके लगा कर रातों–रात तैयार कर लिया जाता है। ऐसा रसायन जो एक लौकी को रातभर में दो फुट तक बढ़ा सकता है, वही रसायन जब मानव शरीर में जाएगा तो स्वाभाविक है कि आंतों पर इसका कहर तो बरसेगा ही और इसके परिणाम भयंकर बीमारियों के रूप में आ ही रहे हैं। मिलावट और रसायनों के प्रयोग ने आज लगभग हर चीज के स्वाद व हमारे स्वास्थ्य को बिगाड़ कर रख दिया है। आज किसी 55–60 वर्ष के आदमी से पूछेंगे तो शायद वह यही कहेगा कि संतरे में वो दूर तक फैलने वाली खशबू नहीं, अमरूद में अब वो लाली और मिठास नहीं, करेले और खीरे में वो कड़वाहट नहीं और दूध व घी की तो पूछिए ही मत। ना तो दूध में वो महक है, और ना ही घी में वो गुण। महाकवि रहीम जी अगर आज होते तो वो अपना माथा पीटते कि उन्होंने केवल एक श्लोक ही गलत क्यों लिख डाला :–

"खीरा सिर ते काटिए, मलियत नमक लगाए।
रहिमन करुये मुखन को, चहियत इहै सजाय।।

सच कहें तो रहिमन जी ही क्यूं, सब माथा पीट रहे हैं कि खीरे और करेले के औषधीय गुण तो उनकी कड़वाहट में ही थे, आखिर वो गए कहाँ। क्या विकास इसी को कहते हैं कि वस्तुओं के प्राकृतिक स्वरूपों और प्राकृतिक रूप से उत्पन्न होने वाली वस्तुओं को ही अपने स्वार्थ के लिए विकृत कर दें। सतयुग से लेकर लगभग पिछले 80 वर्षों तक सब कुछ लगभग सामान्य सा ही चल रहा था। मिलावट और रसायनों के प्रयोग ने खाद्य पदार्थों के प्राकृतिक गुणों को बर्बाद करके रख दिया है। नकली घी, नकली दूध, नकली मसाले, नकली मावे से बनी मिठाइयाँ यहाँ तक की नकली दवाइयाँ–सब कुछ नकली हो चुका है आज। कल–कारखानों के कचरे व विषैली गैसों ने वातावरण विषैला बना दिया है। आज हर इंसान किसी न किसी बीमारी का शिकार होकर रह गया है। धरती को तो रहने लायक छोड़ा नहीं अब यह विकास पुरुष बारूद के ढेर पर सवार होकर चाँद को सजाने चला है।

तकनीक और विज्ञान का प्रयोग मानव हित में हो तो अच्छा होगा। उदाहरण के लिए हमारा ध्यान पेयजल के अभाव वाले क्षेत्रों में शुद्ध जल उपलब्ध करवाना होना चाहिए, न कि मंगल ग्रह पर जाकर जल की खोज करना। इसी प्रकार परमाणु वारहैड युक्त मिसाइल की मारक क्षमता में वृद्धि कर मानव सभ्यताओं का विनाश करने के बजाय प्राकृतिक/जैविक खादों का प्रयोग कर किस प्रकार अधिक से अधिक फसलों व फलों का उत्पादन हो, इस पर ध्यान एवं शोध की आवश्यकता है। आज समय की मांग है कि हम प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा करें और प्रकृति की शरण में जाएं ताकि हम इस धरा को स्वर्ग से भी सुंदर बना सकें तथा रोगमुक्त जीवन जी सके वरना तो वह दिन दूर नहीं जब अणु, परमाणु और मिलावट के इस खेल में धरा का यह मानव स्वयं ही धराशायी हो जाएगा।

जी! बात पते की जी

सुभाष कुमार
निम्न श्रेणी लिपिक

★ ये जरूरी नहीं है कि हर रोज मंदिर जाने से इंसान धार्मिक बन जाए, लेकिन कर्म ऐसे होने चाहिएँ कि इंसान जहाँ भी जाए मंदिर वहाँ बन जाए।

★ रब ने बड़े अज़ीब ये दिल के रिश्ते बनाए हैं,
सबसे ज्यादा वही रोया है जिसने ईमानदारी से निभाए हैं।

★ अपने वो नहीं होते जो तस्वीर में साथ खड़े हों,
अपने वो होते हैं जो तक़लीफ में साथ खड़े हों।

★ रिश्ते हमेशा एक दूसरे का ख्याल रखने के लिए बनाए जाते हैं,
एक–दूसरे का इस्तेमाल करने के लिए नहीं।

★ दौलत की भूख ऐसी लगी कि कमाने निकल गए,
जब दौलत मिली तो हाथ से रिश्ते निकल गए।

★ बच्चों के साथ रहने की फुर्सत न मिल सकी,
फुर्सत मिली तो बच्चे कमाने निकल गए।

★ वक्त नूर को भी बेनूर बना देता है।
वक्त फ़कीर को भी हजूर बना देता है।

★ वक्त की कद्र कर ऐ बंदे
वक्त कोयले को भी कोहेनूर बना देता है।

★ नाराज ना होना कभी यह सोचकर कि काम मेरा और नाम किसी और का हो रहा है। यहाँ सदियों से जलते तो ''घी और रूई'' हैं पर लोग कहते है कि दीया जल रहा है।

★ झुकने से रिश्ता गहरा होता है तो झुक जाओ,
पर हर बार आपको ही झुकना पड़े तो रूक जाओ।

★ बदल जाओ वक्त के साथ या फिर वक्त बदलना सीखो,
मजबूरियों को मत कोसो, हर हाल में चलना सीखो।

आलस्य मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है

यश वर्मा
निम्न श्रेणी लिपिक

एक प्रतापी गुरु थे जो अपने सभी शिष्यों से बहुत प्रेम करते थे। अपने शिष्यों के गुणों और कमियों के बारे में जानकर उन्हें भविष्य के लिए तैयार करते थे। उनका एकमात्र लक्ष्य था कि उनका हर एक शिष्य जीवन के हर पड़ाव पर हिम्मत से आगे बढ़े।

उनके सभी शिष्यों में एक शिष्य था जो अत्यंत भोला था। स्वभाव का बड़ा ही कोमल और सरल विचारों वाला था लेकिन वह बहुत ज्यादा आलसी था। आलस के कारण ही उसे कुछ भी पाने का मन नहीं था। वो बिना कर्म के मिलने वाले फल में रुचि रखता था। उसका यह अवगुण गुरू को बहुत परेशान कर रहा था। वे दिन रात अपने उसी शिष्य के विषय में सोच रहे थे।

एक दिन उन्होंने पारस पत्थर की कहानी अपने सभी शिष्यों को सुनाई। इस पत्थर के बारे में जानने के लिए सबसे अधिक जिज्ञासु वही शिष्य था। यह देख गुरू उसकी मंशा समझ गए। वे समझ गए कि यह आलसी है इसलिए इसे इस जादुई पत्थर की लालसा है। लेकिन ये मूर्ख यह नहीं जानता कि जो व्यक्ति कर्महीन होता है उसकी सहायता तो स्वयं भगवान भी नहीं कर सकते और ये तो बस एक साधारण सा पत्थर है। यह सोचते–सोचते गुरू ने सोचा कि यही सही वक्त है इस शिष्य को आलस्य के अवगुणों से अवगत कराने का। ऐसा सोच गुरू जी ने उस शिष्य को अपनी कुटिया में बुलवाया। कुछ क्षण बाद, कुटिया के भीतर शिष्य ने प्रवेश किया और गुरू को सिर झुकाकर प्रणाम किया। गुरू ने आशीर्वाद देते हुए कहा – बेटा, मैंने आज जिस पारस पत्थर की कहानी सुनाई वो पत्थर मेरे पास है और तुम मेरे प्रिय शिष्य हो, इसलिए मैं वो पत्थर सूर्य उदय से लेकर सूर्यास्त तक के लिए तुम्हें देना चाहता हूँ। तुम उससे जो करना चाहो कर सकते हो। तुम्हें जितना स्वर्ण चाहिए तुम इस पत्थर से इस दिए गए समय में बना सकते हो। यह सुनकर शिष्य की खुशी का ठिकाना न था। गुरू जी ने उसे प्रातः सूर्योदय होने पर पत्थर देने को कहा। रात भर वह इस पत्थर के बारे में सोचता रहा। दूसरे दिन, शिष्य ने गुरू जी से पत्थर लिया और सोचने लगा कि कितना स्वर्ण मेरे जीवन के लिए काफी होगा? और इसी चिंतन में उसने आधा दिन निकाल दिया। भोजन कर वो अपने कक्ष में आया। उस वक्त भी वह उसी चिंतन में था कि कितना स्वर्ण जीवन यापन के लिए पर्याप्त होगा। यह सोचते–सोचते आदतानुसार भोजन के बाद उसकी आँख लग गई और जब आँख खुली तब दिन ढलने को था और गुरूजी के वापस आने का समय हो चुका था। उसे फिर कुछ समझ नहीं आया। इतने में गुरू जी वापस आ गए और उन्होंने पत्थर वापस ले लिया। शिष्य ने बहुत विनती की लेकिन गुरु जी ने एक न सुनी। तब गुरू जी ने शिष्य को समझाया, "पुत्र आलस्य व्यक्ति की समझ पर लगा ताला है। आलस्य के कारण तुम इतने महान अवसर का लाभ भी ना उठा सके। जो व्यक्ति कर्म से भागता है उसकी किस्मत कभी उसका साथ नहीं देती। तुम एक अच्छे शिष्य हो परन्तु तुममें बहुत आलस्य है। जिस दिन तुम इस आलस्य के चौले को निकाल फैंकोगे उस दिन तुम्हारे पास कई पारस के पत्थर होंगे।" शिष्य को गुरू की बात समझ आ गई और उसने खुद को पूरी तरह बदल लिया। उसे कभी किसी पारस की लालसा नहीं रही।

राजभाषा हिन्दी के विकास में भाषा प्रौद्योगिकी का योगदान

पुरस्कृत निबंध

पप्पू कुमार सिन्हा
निम्न श्रेणी लिपिक

आज का युग तकनीक का युग है। इसलिए हम यह कह सकते हैं कि हम 'टेक्नीकल' हो गए हैं। उदाहरण के तौर पर पहले लोग 25 पैसे वाले पोस्टकार्ड या 75 पैसे के अन्तर्देशीय कार्ड पर पत्र लिखते थे। लेकिन आज हम अपने मोबाइल फोन से एस.एम.एस. एवं ई–मेल के जरिए तुरंत परिणाम जान लेते हैं। अतः हम कह सकते हैं कि हम 'टेक्नीकली स्मार्ट' बन गए हैं। आजकल के बच्चे पढ़ाई भी ई–लर्निंग या ई–क्लासेस के जरिए करते हैं। अब इस तकनीक को भाषा के साथ जोड़ते हैं तो देखते हैं कि पहले ई–मेल या एस. एम. एस. के लिए सिर्फ अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाता था, अब भारत सरकार एवं उनके साथ जुड़कर बहुत सी आई.टी. कम्पनियों के अथक प्रयास से हिन्दी में भी ई–मेल एवं एस.एम.एस. भेजे जा रहे हैं। आरम्भ में जब कंप्यूटर आया तो सभी लोग अंग्रेजी में ही कार्य करते थे। उन्हें यह लगता था कि कंप्यूटर पर सिर्फ और सिर्फ अंग्रेजी में ही कार्य किया जा सकता है। लेकिन यह अवधारणा गलत थी। आज हमारे अथक प्रयास से या यह कह सकते हैं कि तकनीक के माध्यम से हमने इस पर सफलता प्राप्त कर ली है और हिन्दी में कंप्यूटर पर अच्छी तरह से कार्य करते हैं। इस तरह हम कह सकते हैं कि राजभाषा हिन्दी के विकास में भाषा प्रौद्योगिकी का योगदान बहुत ही बड़ा है।

हम सभी कर्मचारियों का संवैधानिक तथा नैतिक कर्त्तव्य बनता है कि हम हिन्दी में कार्य करें, लेकिन अंग्रेजी में काम कर करके इतने आदी हो गए हैं कि हिन्दी में कार्य करना मुश्किल सा लगता है। अंग्रेजी में कार्य करने के पीछे यह लगता है कि कंप्यूटर पर सिर्फ अंग्रेजी भाषा में ही कार्य किया जा सकता है। कंप्यूटर पर हिन्दी में कार्य करना अब बहुत ही आसान हो गया है क्योंकि बहुत सारे टूल आ गए हैं जिनके माध्यम से कंप्यूटर पर हिन्दी में कार्य करना आसान हो गया है। उदाहरण स्वरूप 'इन्स्क्रिप्ट की–बोर्ड' की बात करते हैं। यह की–बोर्ड भारत सरकार द्वारा मानक की–बोर्ड है। यह सभी कम्प्यूटरों में इन्स्टॉल होता है। इन्स्क्रिप्ट की–बोर्ड के माध्यम से टाइपिंग सीखना बहुत ही आसान है। यह सबसे अधिक गति वाला की–बोर्ड माना जाता है तथा त्रुटि रहित होता है। इसमें एक वर्ण हेतु एक 'की' का प्रयोग होता है तथा जिससे समय की बचत होती है और टाइंपिग की गति अधिक होती है। इस की–बोर्ड में स्वर बाईं ओर तथा व्यंजन दाईं ओर रखे गए हैं जिसे याद करना बहुत ही आसान है। चाहे तो कोई भी कर्मचारी हफ्ते–दस दिनों में हिन्दी टाइपिंग सीख सकता है और सीखकर हिन्दी में कंप्यूटर पर टाइपिंग कर सकता है। इस की–बोर्ड की एक खास विशेषता यह है कि इन्स्क्रिप्ट की–बोर्ड के माध्यम से अगर हिन्दी में टाइपिंग सीखी है तो भारत की अन्य भाषाओं जैसे–पंजाबी, तमिल, उड़िया, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं की टाइपिंग कर सकते हैं। इन्स्क्रिप्ट की–बोर्ड के माध्यम से टाइप किए गए तथ्य को ई–मेल या मैसेज से किसी दूसरे क्षेत्र अर्थात् – उड़ीसा, गुजरात आदि क्षेत्रों में भेजते हैं तो भाषा परिवर्तन नहीं होता। इससे पहले 'रेमिंग्टन' की–बोर्ड का प्रयोग करते थे तथा क्रुतिदेव में टाइप कर ई–मेल या मैसेज भेजते थे, तो वहाँ जाकर अगर उस कंप्यूटर पर यह फोन्ट नहीं हुआ तो वहाँ ई–मेल या मैसेज अपठनीय होता था और इससे बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था।

इसके बाद फोनेटिक की–बोर्ड के माध्यम से हिन्दी में टाइप किया जा सकता है। इसमें कोई भी कर्मचारी रोमन लिपि में टाइप कर जिस भाषा या लिपि में चाहता है उसमें टाइपिंग कर सकता है। उदाहरण के तौर पर फोनेटिक की–बोर्ड के माध्यम से रोमन लिपी में 'इंडियन' लिखता है तो वह अन्य लिपि में भी 'इंडियन' ही प्राप्त होगा न कि ''भारतीय''। अतः उस तरह से एक लिपि से दूसरी लिपि में परिवर्तन होना 'लिप्यांतरण' कहलाता है। गूगल इनपुट के माध्यम से ऑनलाइन या ऑफलाइन 80 अन्य भाषाओं में टाइपिंग की जा सकती है। माइक्रोसॉफ्ट इनपुट लेंग्वेज से अन्य 12 भाषाओं में टाइप किया जा सकता है। यह कंप्यूटर पर निःशुल्क उपलब्ध है।

हिन्दी एक बहुत बड़ी भाषा मानी जाती है। इसमें सभी भाषाओं के शब्द अन्तर्निहित हैं या कह सकते हैं कि सभी भाषाओं का समावेश है। अतः भारत सरकार द्वारा बहुत सारी तकनीक अपनाई गई हैं जिससे कम्प्यूटर पर हिन्दी में काम करना बहुत ही आसान हो गया है। आगे हमने इन्स्क्रिप्ट की–बोर्ड की चर्चा की है जिसमें संयुक्ताक्षर हेतु सिर्फ एक की बनाई गई है नहीं तो इससे पहले संयुक्ताक्षर हेतु अलग–अलग से दो की का प्रयोग किया जाता था। इस की–बोर्ड की एक खास विशेषता यह है कि एक ही की के ऊपर दो वर्ण हैं। उदाहरण स्वरूप अगर एक की पर 'क' है तो उसी की पर अगर शिफ्ट दबाकर टाइप करें तो 'ख' व्यंजन की प्राप्ति होती है। अतः हम कह सकते हैं कि 'इस्क्रिप्ट की–बोर्ड' ने हिन्दी टाइपिंग सीखना बहुत ही आसान कर दिया है। अतः हम कह सकते हैं कि तकनीक द्वारा आज राजभाषा हिन्दी का प्रचार–प्रसार बहुत ज्यादा हुआ है। भारत सरकार के सभी कार्यालयों में राजभाषा शाखा होती है। राजभाषा कार्मिक समय–समय पर सभी शाखाओं का निरीक्षण करते हैं और देखते हैं कि राजभाषा हिन्दी का प्रयोग हो रहा है या नहीं। सभी कर्मचारियों की सूची तैयार कर उन्हें कम्प्यूटर पर हिन्दी टाइपिंग के प्रशिक्षण हेतु नामित करते हैं और छह महीने के लिए हिन्दी टाइपिंग प्रशिक्षण दिलाया जाता है और जो कर्मचारी इस प्रशिक्षण में सफल होते हैं उन्हें ईनाम भी प्रदान किया जाता है तथा पूरे एक वर्ष के लिए कर्मचारी को एक 'इंक्रीमेंट' भी दिया जाता है। अतः राजभाषा शाखा को हिन्दी के एक सफल टूल के रूप में परिभाषित कर सकते हैं क्योंकि यह सभी कर्मचारियों की समस्याओं को दूर करती है और हिन्दी के प्रयोग हेतु सभी कठिनाइयों को दूर करती है। इसके साथ–साथ हिन्दी प्रयोग प्रोत्साहन भी दिया जाता है। इस योजना के तहत कोई भी कर्मचारी हिन्दी में कार्य करता है तो उसे पुरस्कृत किया जाता है। इससे सभी कर्मचारियों में हिन्दी में कार्य करने के प्रति रुचि पैदा होती है। अतः भारत सरकार द्वारा सभी केन्द्रीय कार्यालयों में राजभाषा शाखा एक बहुत बड़े टूल के रूप में मानी जा सकती है। राजभाषा शाखा में तैनात कर्मचारी किसी भी प्रकार की हिन्दी प्रयोग संबंधी कठिनाइयों को दूर करने में सक्षम हैं। कार्यालयी कामकाज में जो भी समस्या आती है उसे हर संभव राजभाषा कर्मचारियों द्वारा दूर किया जाता है।

भाग्य और पुरुषार्थ

मनोज कोटनाला
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

हम अक्सर कहते हैं कि वह बहुत भाग्यशाली व्यक्ति है या अमुक व्यक्ति भाग्यहीन है। किसी का भाग्य अधिक बलशाली होता है और किसी का कम, लेकिन जीवन में दोनों ही सफल होते हैं। एक भाग्य के बल पर तो एक पुरुषार्थ के बल पर। जीवन भाग्य और पुरुषार्थ का सामंजस्य है। हम यह जानते हैं कि भाग्यशाली व्यक्ति तो अपने भाग्य के बल पर बहुत कुछ पा जाता है। लेकिन पुरुषार्थी व्यक्ति, विपरीत परिस्थिति में भी संघर्ष करके अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है। मनुष्य के जीवन में भाग्य और पुरुषार्थ एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। हमने कई महान व्यक्तियों की जीवनियाँ पढ़ी हैं। महान वैज्ञानिक थॉमस अल्वा एडीसन जिन्होंने 100 से अधिक आविष्कार किए उन्हें एक बल्ब के आविष्कार के लिए सैकड़ों बार असफलता प्राप्त हुई लेकिन उनके अंतिम प्रयास के कारण ही आज बल्ब के कारण जगत प्रकाशमान है। इसी प्रकार नोबल पुरस्कार के जनक अल्फ्रेड नोबल को डायनामाइट के आविष्कार में अपने परिवार के सदस्यों व साथियों को खोना पड़ा था और उन्होंने अपने अंतिम प्रयास में एक पानी के जहाज पर प्रयोगशाला को स्थापित किया था जो कि समुद्र में स्थित था जिससे यदि कोई दुर्घटना हो तो ऐसी स्थिति में अपनी जान बचाई जा सके और अपने प्रयोग को सफल बनाया जा सके और अंततः वे डायनामाइट के आविष्कारक बने।

इसी तरह भारत के जनमानस को नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की जीवनी पता है। वे एक सिद्धांतवादी नेता थे। वे कांग्रेस के उच्च स्तरीय नेता थे। वे कांग्रेस के चुने हुए अध्यक्ष थे लेकिन गांधीजी के साथ वैचारिक मतभेद और विरोध के कारण उन्होंने अपने पद से इस्तीफा दे दिया। उन्हें द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान ब्रितानी हुकुमत द्वारा घर में नजरबंद किया गया था। लेकिन उनकी सूझबूझ और देश प्रेम के कारण वे नजरबंदी से फरार होकर कलकत्ता से गोमो, गोमो से मुंबई, मुंबई से पेशावर, पेशावर से काबुल, काबुल से मॉस्को (रूस), मॉस्को से बर्लिन (जर्मनी), बर्लिन से टोक्यो (जापान) व सिंगापुर में गए और आजाद हिंद फौज का गठन किया। उनकी फौज में 50,000 से अधिक भारतीय सैनिक थे। इनमें से बहुत से सैनिक भारतीय सेना के सैनिक थे जिन्हें जापानियों ने युद्धबंदी बनाया था। उनकी फौज बहुत ही बहादुरी के साथ आखिरी समय तक लड़ती रही। नेताजी को हर कदम पर विपरीत परिस्थितियों से संघर्ष करना पड़ा था। वे भारत के पश्चिमी भाग से रूस की सहायता से देश को आजाद कराना चाहते थे। लेकिन जब तक वे रूस पहुँचे, रूस पर हिटलर की फौजों ने आक्रमण कर दिया था और जर्मन फौज का कब्जा लेनिनग्राद (आजकल पेत्रोग्राद) पर हो चुका था। नेताजी ने अपनी रणनीति बदली और वे जर्मनी में योजना बनाकर सेना गठन का कार्य करने लगे। उन्होंने आजाद हिंद फौज का गठन किया। आजाद हिंद फौज ने पूर्वोत्तर भारत में मणिपुर पर कब्जा करके उसे आज़ाद करा लिया था। जब देश आजाद हुआ तो तत्कालीन ब्रिटेन के प्रधानमंत्री क्लेमेंट एटली ने कहा कि वे भारत छोड़ कर जा रहे हैं व भारत को शीघ्र ही आजाद किया जाएगा। उन्होंने इसका श्रेय नेताजी को दिया। इसके पीछे भारतीय सेना की अंग्रेजों के प्रति वफादारी में कमी आना भी एक प्रमुख कारण था। इसमें नेताजी ने एक अहम भूमिका निभाई। इस प्रकार नेताजी व सैनिकों के पुरुषार्थ ने अंग्रेजों की 200 साल की गुलामी को भारत से समाप्त कर दिया और 15 अगस्त 1947 को भारत आजाद हो गया।

इस विषय पर जो कुछ भी लिखा जाए वह कम है लेकिन संक्षेप में हम कह सकते हैं कि पुरुषार्थ के आगे भाग्य भी झुक सकता है। इसके लिए मनुष्य को निरंतर प्रयास करना पड़ता है। तुलसीदास जी ने कहा है:–

''कर्महीन नर पावत नाहीं'' ।

मानव प्रकृति

वेद प्रकाश शर्मा
अधीक्षक

यह मानव की प्रकृति क्यूँ है कि वह सभ्य होते हुए भी असभ्य होता जा रहा है। जानवर केवल पेट की भूख मिटाने के लिए सारा दिन जूझते हैं व जरूरत से ज्यादा इकट्ठा नहीं करते। मनुष्य अपने अतिरिक्त आने वाली पीढ़ियों के लिए भी जोड़ता है व कोल्हू के बैल की तरह अपना सारा जीवन बिता देता है। न दिन में चैन न रात में नींद। वैसे मनुष्य की प्राथमिक पाठशाला उसका परिवार ही होता है तथा पारिवारिक संस्कारों का ही उस पर असर होता है। जिस तरह के संस्कार बचपन में व्यक्ति को मिलते हैं वह उसी तरह का व्यवहार व कर्म भी करता है।

कुटिल प्रकृति का मनुष्य अपने अंहकार और अपने मायाजाल से कभी भी बाहर नहीं निकल पाता। ऐसे व्यक्ति के लिए किसी दूसरे पर विश्वास करना तो दूर की बात है, वह अपने ऊपर भी विश्वास नहीं कर पाता। कई बार तो आप ही अपने मकड़ जाल में फँस जाता है, जिसमें से उसको निकलना मुश्किल हो जाता है।

दूसरी ओर सज्जन पुरूष देव तुल्य होता है। उसकी जरूरतें भी सीमित होती हैं। वह दूसरे लोगों के दुःख–दर्द को आसानी से समझ लेता है। ऐसे महापुरूष के पग जिस स्थान पर पड़ते हैं वह अपने आचरण व व्यवहार से वहाँ का परिवेश ही बदल देता है। उसे सब लोग अपने लगते हैं। दूसरों के दुःख उसको अपने ऊपर बीतते हुए महसूस होते हैं। वह लोगों के दुःख कम करने की कोशिश करता है।

मनुष्य जब स्वयं को काबू कर लेता है, तो उसका मन भटकना बंद हो जाता है। वह उड़ते धुओं के पीछे नहीं लगता। वह मन की मस्ती में रहता है। दूसरों के काम आने में खुशी महसूस करता है। वह दुनिया व समाज में रहता हुआ भी निर्लेप होता है। उसको सारे अपने लगते हैं। वह सामाजिक कामों में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेता है ताकि समाज के सारे सदस्य मेहनत का फल मिल–बांट कर खा सकें। वह समाज में बिखराव पैदा नहीं करता। गन्दगी को दूर करने की कोशिश करता है। वह सबको साथ लेकर चलता है। वह अपनी प्रशंसा नहीं करता बल्कि दूसरों के काम की प्रशंसा करता है। उनकी दिलोजान से प्रशंसा करता है। उसके हृदय में मनुष्यता का वास होता है।

यह मनुष्य की सोच ही है जो उसको अच्छा व बुरा बनाती है। आओ, अपनी सोच को बदलें व मानवता के भले के लिए एक सुन्दर, मनमोहक, शांत, पवित्र, शुद्ध जल की तरह, बरसात के बाद साफ हुई हवा की तरह, एक सुन्दर संसार का निर्माण करें।

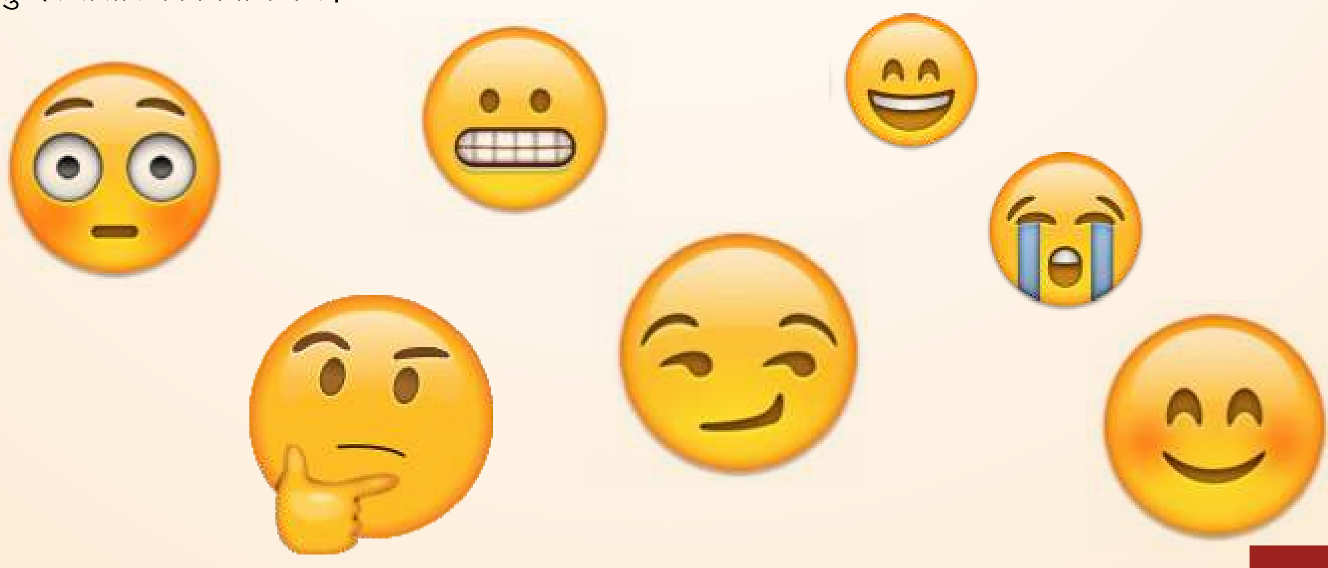

वर्ष 1893 में काशी नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना की गई।

''बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ'' अभियान में जनसहभागिता का महत्व

पुरस्कृत लेख

जसवंत कुमारी
सहायक

भारत एक ऐसा देश है, जिसे ऋषि मुनियों का देश भी कहा जाता है। यहाँ हर प्रकार के लोगों को रहने के लिए शरण दी जाती है। भारत ही एक ऐसा देश है जो शान्तिप्रिय है, किसी से लड़ाई–झगड़े नहीं करता है। अमरीका जैसे प्रसिद्ध विकसित देश से इसकी तुलना की जाए तो यह किसी से पिछड़ा हुआ नहीं है। परन्तु कुछ कुरीतियों के कारण वो अब भी पिछड़ा हुआ है जैसे रोजगार, दहेजप्रथा, अशिक्षा, अनपढ़ता, रूढ़वादिता इत्यादि। आज 21वीं सदी में भी औरतों की दशा दयनीय है। इसके पीछे हमारा समाज ही है जो कुछ कारणों जैसे लोभ, इच्छा इत्यादि से आगे बढ़ने का मौका नहीं दे रहा है।

भारत के माननीय प्रधानमंत्री ने हरियाणा में 22 जनवरी, 2015 को "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान" की शुरूआत की। इस योजना का महत्व ही 0–6 आयु वर्ग की लड़कियों की सुरक्षा, उनको बचाना एवम् उनको पढ़ाना है ताकि वो अच्छा एवम् सही ढंग से अपना जीवनयापन कर सकें एवम् कल का भविष्य बन सकें। इस योजना को सफल बनाने के लिए माधुरी दीक्षित, जो कि भारतीय सिनेमा की प्रसिद्ध कलाकार हैं, उनको इस कार्यक्रम में बुलाया गया और इस योजना का ब्रांड एंबेसडर बनाया। इस योजना का मुख्य उद्देश्य भारत में फैले लिंगानुपात के अंतर को समाप्त करना है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार प्रत्येक 1000 लड़कों के पीछे 926 लड़कियां हैं। यह भिन्नता का अनुपात सबसे ज्यादा हरियाणा में देखने को मिला तो प्रधानमंत्री ने इसे गम्भीरतापूर्वक लिया और लड़कियों को बचाने, पढ़ाने, लड़कों की तुलना में उनके जीवन को बेहतर बनाने के लिए, लिंगानुपात को कम करने के लिए इस अभियान की शुरूआत की तथा इसके लिए 100 करोड़ रूपए की धनराशि भी केन्द्र सरकार द्वारा दी गई। "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ" अभियान को और अधिक बेहतर बनाने के लिए बाल विकास मंत्रालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय इत्यादि मंत्रालयों की भी सहायता ली गई।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने हरियाणा के पानीपत शहर में 22 जनवरी, 2015 को इस संबंध में जनता को भी सम्बोधित किया जिसका मुद्दा केवल "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ" ही था। इस अवसर पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने कहा कि मैं यहाँ भावनात्मक होकर एक भिक्षुक की भांति आपसे बेटियों को बचाने हेतु उनकी सुरक्षा की भीख मांग रहा हूँ। इस कार्यक्रम में ज्यादातर औरतों ने ही भागीदारी दिखाई। भारतीय जनता को "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ" की महत्ता बताई। यदि समाज में बेटी नहीं बचेगी तो समाज को आगे कौन ले जाएगा। उन्होंने बेटियों की सुरक्षा के संबंध में यह भी कहा कि उनकी सुरक्षा घर के अलावा समाज का भी कर्त्तव्य है। यदि वे ऐसा कुकर्म नारी के प्रति देखते हैं तो उसकी सूचना दें तथा चुप न रहें। अपनी सोच को बदलें। इस कार्यक्रम में नरेन्द्र मोदी जी ने कल्पना चावला को भी याद किया जो कि हरियाणा की थी एवम् नासा परीक्षण में वो शहीद हो गई। "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ" कार्यक्रम का मुख्य केन्द्र बिन्दु बेटियों को जीने का अवसर देना, कन्या भ्रूण हत्या को रोकना, लिंगानुपात को कम करना था। लड़कियों के प्रति भारतीय समाज को अपनी सोच बदलनी होगी। इसके अतिरिक्त पुरुष प्रधान समाज में यदि लड़कियों की कमी हो गई तो नानी, दादी जैसे स्त्रीलिंग शब्द ही खत्म हो जाएंगे। पढ़े–लिखे लोगों के लिए पढ़ी–लिखी बहुएँ कहाँ से आएंगी। इसीलिए पीढ़ी को आगे बढ़ाने के लिए लड़कियों की आवश्यकता है। उन्हें जीने का सुअवसर दो, आगे बढ़ने का मौका दो। लड़कों के समान उन्हें पालो। उनकी जरूरतें लड़कों की भांति पूरी करो।

भारत के प्रधानमंत्री ने "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ" अभियान में यह भी कहा कि एक डॉक्टर का कर्त्तव्य जिन्दगी देने का होता है जिन्दगी छीनने का नहीं। आधुनिक युग में भी कुछ चिकित्सक थोड़े लाभ के लिए कन्या को गर्भ में ही जाँच कर मार देते हैं। आधुनिक तकनीकी साधनों के कारण यदि किसी गर्भवती औरत को पता चल जाए कि उसके पेट में पनप रहा शिशु एक कन्या है, तो भ्रूण को गर्भ में ही मरवा दिया जाता है। इसीलिए आधुनिक काल

में नारियों को भी अपनी सोच में बदलाव लाना चाहिए। कन्या भ्रूण हत्या पर रोक एवम् इसकी ओर कदम बढ़ाना चाहिए तथा ऐसे चिकित्सकों के विरूद्ध कड़ी कार्रवाई करनी चाहिए क्योंकि डॉक्टरों को भगवान का रूप कहा जाता है तो उसे किसी की जान नहीं लेनी चाहिए बल्कि अपने पेशे की महत्ता जाननी चाहिए कि उसका कर्त्तव्य जिन्दगी देना है।

"बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान" को और अधिक बेहतर बनाने के लिए सरकार ने एक और प्रशंसनीय कदम बढ़ाया है "कन्या सुकन्या समृद्धि बचत योजना" इस योजना में 10 वर्ष से कम आयु वर्ग की लड़कियों के लिए बैंकों में 1000 रूपए इस योजना के तहत जमा करवाएँ तथा इस पर अच्छी ब्याज दर के साथ 18 वर्ष के बाद या उसके विवाह तक अभिभावक यह पैसा निकलवा सकते हैं। 13 जनवरी को लड़कियों के नाम की लोहड़ी भी कुछ इलाकों में मनाई जाती है। बसों, आवागमन के साधनों पर भी "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओं अभियान" के स्लोगन, कविताएँ लिखी होती हैं। प्राचीन काल में रानी लक्ष्मीबाई को कौन नहीं जानता। उन्होंने कैसे अंग्रेजों के विरूद्ध लड़ाई की एवम् जीत हासिल की। खूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी।

कन्याएं भगवान का दिया हुआ वरदान हैं।
इन्हें जीने का, बढ़ने का मौका दें।

कन्या भ्रूण हत्या की रोकथाम के लिए पंजाब सरकार द्वारा भी विशेष कदम उठाए गए हैं। गर्भ के तीन महीने के अन्दर ही गर्भवती माता का रजिस्ट्रेशन कर दिया जाता है। आँगनवाड़ियों, सेमिनार, कविताओं, विचार गोष्ठियों का भी समय–समय पर आयोजन किया जा रहा है ताकि बेटी की सुरक्षा तथा उसको पढ़ने के और अधिक अवसर मिलें।

अंत में यह कहा जा सकता है कि बेटियाँ हैं तो कल का भविष्य कहलाने वाला पुरुष है। उसको जन्म देने वाली नारी ही हैं इसीलिए कन्याभ्रूण हत्या को रोकना चाहिए। बेटियों की सुरक्षा करनी चाहिए। समाज में फैली रूढ़वादी सोच को बदलने की आवश्यकता है। लड़कियों के प्रति फैली असुरक्षा को दूर करना चाहिए। इसके लिए सरकार द्वारा महिला हेल्पलाइन नम्बर भी दिया जाता है। अंत में यही कहा जा सकता है कि नारी की शान्ति जिन्दाबाद,

नारी उज्जवल भविष्य है, घर की इज्जत है बेटियाँ
इनको जीने एवम् आगे बढ़ने का मौका दें।

खेल

जयंक आहुजा
बहुकार्य स्टाफ

जब आप अपने बच्चों को 12 साल तक शहर के सबसे प्रतिष्ठित और सबसे महंगे स्कूल में पढ़ाते हैं तो क्या आप उस स्कूल से, समाज से, या सरकार से अपने बच्चे के लिए एक सुरक्षित भविष्य की गारंटी मांगते हैं?

फिर जब आप उसे एक बेहद महंगे प्राइवेट इंजीनियरिंग कॉलेज, या मैनेजमेंट कॉलेज में लाखों रुपये खर्च कर पढ़ने भेजते हैं, तो क्या उस कॉलेज से या समाज से या सरकार से अपने बच्चे के लिए एक सुरक्षित भविष्य और कैरियर की गारंटी मांगते हैं?

आप कम से कम 16–18 वर्ष तक अपने बच्चे को दिन–रात पान के पत्ते की तरह सेते है और अपने गाढ़े खून–पसीने की कमाई खर्च कर देते हैं। फिर एक दिन आपको पता लगता है कि आपके बच्चे को तो कोई 7000 रुपयों की नौकरी भी नहीं दे रहा है।

भारत की शिक्षा प्रणाली अपने विद्यार्थियों को कैरियर और भविष्य की कोई गांरटी नहीं देती, इसके बावजूद मैंने आज तक एक भी ऐसा आदमी नहीं देखा जो इसकी विश्वसनीयता पर सवाल उठाए। आखिर लोग बी.टैक और एम.टैक करके भी तो निर्माण सामग्री मट्टी, बालू और सीमेंट बेच रहे हैं।

5 साल दिल्ली, मुंबई, कोटा इंदौर में प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करने वाले भी तो एक दिन पेट पालते नौकरी व्यवसाय करते नज़र आते ही हैं।

तो फिर लोग खिलाड़ियों के लिए ही क्यों सुरक्षित भविष्य की गारंटी मांगते हैं ?

आप खेल प्रतिस्पर्धात्मक भावना को सिर्फ मैडल और सरकारी नौकरी से ही क्यों तौलते हो?

जिस किसी व्यक्ति ने दो चार साल खेलों में भाग लिया है, उस से बात करके देखिए। शराब, गांजा, भांग, स्मैक, हेरोइन या कोकीन का नशा–सुना है कुछ घंटों में उतर जाता है पर खेलों का नशा सारी ज़िन्दगी जारी रहता है जनाब .... उसका खुमार ताउम्र रहता है .....

कैसा भी शौक हो कुछ दिनों में ही सबका नशा उतर जाता है। सिर्फ और सिर्फ खेलों का एक नशा ऐसा होता है जिसकी खुमारी में आदमी सारी जिन्दगी जीता है। किसी खिलाड़ी से बात करके देखिए, वो आपको बताएगा कि मैदान में खेलते, हारते–जीतते और विजय स्तम्भ पर बिताए हुए कुछ पल उसकी जिन्दगी के सबसे हसीन पल थे ...

किसी पूर्व खिलाड़ी से बात कीजिए वो आपको बताएगा कि उसे आज भी 20–25 वर्ष बाद भी उन दिनों के सपने आते हैं, जब वो खेलता था .....

ये हैं खेल–खेल को सिर्फ और सिर्फ नौकरी से जोड़ कर मत देखिए। ये एक जीवन शैली है .... ये वो अलौकिक सुख है जिसे प्राप्त करने का अधिकार हर बच्चे को है। अपने बच्चे को इस सुख से वंचित मत कीजिए। उसे खिलाड़ी बनाइए। पेशेवर न सही, शौकिया ही सही। ओलपिंक भले न हो जिला स्तर ही सही। अपने बच्चे को खेलने का मौका दीजिए। पेशेवर खेल के लिए रोजाना 4 से 8 घंटे के अभ्यास व प्रशिक्षण की जरूरत होती है। शौकिया खेल के लिए सिर्फ एक घंटा भी काफी है।

आओ बच्चों को खिलाड़ी बनाएँ..... और जीवन का आनन्द लें।

वर्ष 1918 में महात्मा गांधी द्वारा दक्षिण भारत हिन्दी प्रचारिणी सभा की स्थापना की गई।

यात्रा वृत्तान्त

एक पुराना गीत है–
छोटी सी है दुनिया,
पहचाने रास्ते....,
तुम कभी तो मिलोगे,
कहीं तो मिलोगे......
तो पूछेंगे हाल.....।

धरती गोल है। हिमालय की ऊँची हिमाच्छादित चोटियों से लेकर सागर की अथाह गहराइयों तक विश्व प्रकृति की सुंदरता से भरा पड़ा है।

आज दुनिया वाकई छोटी हो गई है। यातायात के तीव्रतम साधन उपलब्ध हैं। भारतवर्ष दुनिया के आकर्षण का केन्द्र है। यहाँ घूमने के लिए बहुत–बहुत–बहुत कुछ है।

आइए कुछ जानकारी प्राप्त करें।

वर्ष 1926 में राष्ट्रभाषा प्रचारिणी समिति की स्थापना की गई।

दम घोटती 'दिल्ली'

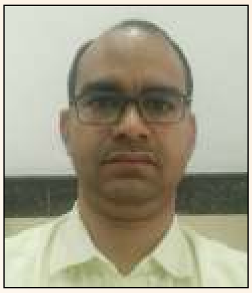

लक्ष्मी नारायण मीणा
सहायक निदेशक

10, नवम्बर 2017 की शाम को जब मैं अपने गाँव (राजस्थान) से दिल्ली आ रहा था तो जो मैंने महसूस किया वो आने वाले समय के लिए कोई बहुत भयानक खतरे से कम नहीं था। जैसे–जैसे बस दिल्ली की तरफ आ रही थी बस की रफ्तार धीमी होती जा रही थी। गुड़गाँव पहुँचते–पहुँचते बस की चाल मानो 10–20 किलोमीटर प्रति घण्टा हो गई। ऐसा लग रहा था कि बस जैसे किसी अंधकार में चली जा रही है। चारों तरफ कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। बस में बैठे सभी लोग अजीब सी चिन्ता में लग रहे थे। सभी दिल्ली के प्रदूषण के बारे में चर्चा कर रहे थे। बस को गुड़गाँव से धौला कुआँ दिल्ली आते–आते लगभग 2 घण्टे लग गए। रास्ते में धुंध की वजह से कई जगह दुर्घटना होने के कारण भारी ट्रैफिक जाम लगा हुआ था। परन्तु ये सब दुर्घटनाएँ एवं ट्रैफिक जाम मेरे लिए सब जाना पहचाना सा लग रहा था, क्योंकि मैं दिल्ली में पिछले 10–15 साल से रह रहा हूँ तो यही सब हमेशा देखने में आता रहा है।

परन्तु मुझे सच में असल चिन्ता तब हुई जब मेरे पास वाली सीट पर बैठे दो बुजुर्ग लोग जिनकी उम्र लगभग 60–65 वर्ष रही होगी, लगातार खाँसते जा रहे थे और उनकी खाँसी लगातार बढ़ती जा रही थी जैसे कि मानो उनकी जान लेकर रहेगी। मैंने उनके साथ वाले नवयुवक से पूछा कि उन्हें कोई परेशानी पहले से है क्या? उसने बताया कि उन्हें इस तरह की कोई परेशानी पहले नहीं हुई थी। बस धीरे–धीरे सराय काले खाँ बस अड्डे की तरफ बढ़ती जा रही थी। उसके साथ–साथ उनकी खाँसी भी बढ़ रही थी। बस में और भी कई लोग सांस लेने में परेशानी होने की बात कर रहे थे। लगभग सभी को सांस लेने में दिक्कत हो रही थी। बस के महारानी बाग पहुँचते–पहुँचते कुल तीन लोगों की यह हालत हो गई कि उन्हें बस से उतरकर किसी अस्पताल की तलाश करनी पड़ी।

तब वास्तव में मुझे लगा कि मैं कहाँ रह रहा हूँ। मैं बार–बार अपने आप से पूछने लगा कि क्या मैं सही जगह रह रहा हूँ? आने वाले समय में दिल्ली का क्या होगा? हमारे बच्चे अथवा आने वाली पीढ़ी का क्या होगा? क्या वो इस हवा में सांस ले पाएँगे? क्या हमारी सरकारें इस परेशानी का कोई हल निकाल लेंगी? या फिर हम ऐसे ही घुट–घुट कर जिएँगे? इसी तरह के बहुत सारे सवाल मेरे दिमाग में आने लगे?

खैर उस दिन जैसे–तैसे मैं घर पहुँच गया। मुझे 6 घण्टे के रास्ते में लगभग 10–11 घण्टे लग गए। रात को सोते समय भी वही सब ख्याल दिमाग में आ रहे थे।

अगले दिन सुबह जब मैंने अखबार पढ़ने के लिए उठाया तो देखा कि लगभग पूरे अखबार में दिल्ली के घुटते हुए दम अर्थात् हवा के प्रदूषण की ही खबरें थी। कहीं पर इसके कारणों में हरियाणा, पंजाब के खेतों में जलाई जा रही पराली को जिम्मेदार माना जा रहा था, कहीं पर ट्रैफिक जाम, कूड़े के ढेरों में लगाई जा रही आग, नए भवन निर्माण, दिल्ली में बढ़ती जनसंख्या, सरकार की अक्षमता आदि तरह–तरह के कारणों को जिम्मेदार बताया गया था। साथ ही इसको दूर करने के भी तरह–तरह के उपाय जैसे–कारों के लिए सम–विषम फार्मूले का प्रयोग, कृत्रिम वर्षा, हरियाणा व पंजाब सरकारों से बातचीत करना आदि।

मुझे यह सब कुछ जाना पहचाना सा लग रहा था क्योंकि यह मामला लगभग हर वर्ष इसी समय पर पिछले कई वर्षों से सामने आ रहा था और थोड़े दिन की चर्चा, आरोप–प्रत्यारोपों के उपरान्त समय के साथ भुला दिया जाता है। परन्तु इस वर्ष वर्तमान सरकार द्वारा लगभग एक सप्ताह तक मैडिकल इमरजेंसी लगाई गई और स्कूलों को भी कुछ समय के लिए बन्द करवाया गया। इस वजह से यह मामला कुछ ज्यादा गम्भीर लग रहा था।

आज दिनांक 26 नवम्बर है और यह मामला अब चर्चा से बिल्कुल गायब सा हो गया है अब फिर दिमाग में कुछ नए सवाल उठ रहे हैं कि बस हो गई चर्चा, हो गए आरोप–प्रत्यारोप, ले लिया सरकार ने एक्शन, हो गए लोग जागृत, सो गए न्यायालय, लग गए सभी लोग अपने पुराने कार्यों में इत्यादि।

क्या यही दम घोटती इस दिल्ली का समाधान होगा? क्या हम इसी तरह गायब होती पक्षियों की प्रजातियों को बचाएँगे। आखिर कब तक यह सब ऐसे ही चलेगा? कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है। क्या हमारी जिम्मेदारी कुछ भी नहीं है? क्या केवल सोशल मीडिया पर चर्चा करने से इस भयानक समस्या का समाधान हो सकता है? इस मामले में सच में हमें प्रत्येक व्यक्ति को इस समस्या के समाधान के लिए उचित कदम उठाने की जरूरत है। केवल बातें करने या चर्चा करने से उस समस्या का समाधान नहीं हो सकता। साथ ही चुनी गई सरकारों को भी यह मामला सर्वोपरि रखना होगा और इसे जड़ से मिटाने के लिए अपनी पूरी इच्छाशक्ति से काम करने की जरूरत है।

यह समस्या इतनी विकराल रूप ले चुकी है कि इस पर लिखने से कलम रूक ही नहीं रही है। इसने हमें इस तरह से प्रभावित कर रखा है परन्तु जो मैं कहना चाह रहा हूँ वो इसी छोटे से लेख से स्पष्ट हो रहा है। अतः मैं अपनी कलम को अब विराम देता हूँ।

चर्च ही नहीं मंदिर भी हैं गोवा में

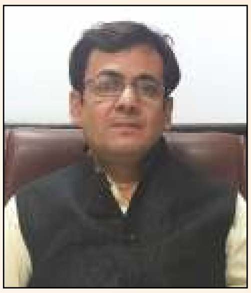

श्याम कुमार
उप निदेशक

गोवा एक बार हो आ। अंग्रेजी में सन, सी एण्ड सैण्ड का शहर गोवा। कार्निवल की मस्ती में डूबा गोवा। प्रसिद्ध मदिरा ''फेनी'' का गोवा। समुद्री तटों पर नहाने की मौज का शहर गोवा और गिरिजाघरों के लिए प्रसिद्ध गोवा .... बहुत कुछ है गोवा, पर मंदिरों के लिए भी प्रसिद्ध है गोवा ..... कम लोग जानते हैं, खासकर वे, जो गोवा नहीं गए।

भारत के पश्चिम में कोंकण क्षेत्र में समुद्री तटों से भरपूर गोवा एक छोटा सा राज्य है जहाँ नीले–हरे पानी के साफ तट, नारियल के घने बाग जो हवाओं के साथ झूमते रहते हैं। काजू के पेड़, छोटी पहाड़ियाँ, खूबसूरत छोटे घर, बंगले, गिरिजाघर, मंदिर और मंद–मंद बहती शुद्ध हवा बरबस ध्यान खींचती है सबका।

दर्शनीय स्थल–

गोवा में मंगेषी मंदिर प्रसिद्ध है। इसके अतिरिक्त छोटे–बड़े अनेक मंदिर हैं। एक अन्य मंदिर में विष्णु जी की मूर्ति मंदिर में स्थित तालाब के तल में रखी जाती है। केवल उत्सव के समय उसे निकाल कर उत्सव तक विधि – विधान से पूजनादि कर पुनः तालाब में छोड़ दिया जाता है – शायद यह मान कर कि विष्णु भगवान का निवास जल के भीतर है। अन्य मंदिरों में नागेषी मंदिर, महालक्ष्मी मंदिर, शांता दुर्गा मंदिर व भगवान गणेश का फार्मा गुडी मंदिर है।

पुर्तगालियों के शासन के दौरान गोवा में अनेक गिरिजाघर बनाए गए थे। आज भी वे ऐतिहासिक गिरिजाघर पूरे गोवा में हैं और उनमें प्रार्थना सभाएँ होती हैं। गोवा के ये गिरिजाघर न केवल खूबसूरत हैं बल्कि पुर्तगाली संस्कृति व शिल्प का कुछ उदाहरण देते हैं।

गोवा में पुर्तगाली शासन से संबंधित व इतिहास की झलक देता एक संग्रहालय भी एक चर्च में समर्पित है–यह स्थान देखने लायक है। ओल्ड गोवा (पुराना शहर) में भी देखने योग्य गिरिजाघर है। यद्यपि मसालों के लिए केरल प्रसिद्ध है परन्तु यहाँ पर भी (गोवा में) मसालों का एक बाग लोगों के देखने के लिए है। यहाँ पर काली मिर्च, लौंग आदि के साथ अनेक वनस्पतियों के पेड़–पौधे देखे जा सकते हैं। यहाँ पर भी एक छोटा संग्रहालय है जहाँ कुछ वस्तुएँ खरीदी जा सकती हैं।

गोवा में छोटे–बड़े अनेक समुद्री तट हैं। इनमें कुछ तट नहाने लायक हैं। दिन के समय हजारों पर्यटक समुद्री लहरों का आनन्द उठाते हैं। जो तैरना नहीं जानते, घुटने भर पानी तक जाकर खड़े हो जाते हैं। आती–जाती लहरें पूरा स्नान करवा देती हैं। समुद्र में जबरदस्त आकर्षण होता है। भूलकर भी गहरे पानी में नहीं जाना चाहिए और लहरों के वेग से बच्चों को बचाते हुए उन्हें पकड़कर रखें या तट के पास ही नहाने दें। कई तटों पर पैराशूट से ऊपर घुमाना, वाटर स्कूटी जैसे मनोरंजक साधन उपलब्ध हैं। गोवा के कुछ प्रसिद्ध तट–कलंगूट, अंजुना बीच, वागातोर बीच, कोलवा बीच हैं।

शाम के समय गोवा के तटों पर घूम सकते हैं, गोवा के

प्रसिद्ध सूती कपड़े खरीद सकते हैं या दोना पावला जाकर गोवा की झलक देख सकते हैं। दोना पावला में एक प्रेमी युगल की मूर्ति है। यहाँ पर समुद्री हवाएँ और पूरे गोवा की छोटी झलक दिखाई देती है। शाम का गोवा सुंदर और रात का मनमोहक गोवा। पणजी शहर में नदी पर तैरते क्रूज जिनमें गोवा की जगमगाती रोशनियाँ, पानी पर ढेरों तैरते क्रूज, नदी के किनारे दोनों ओर पाँच सितारा होटल, रिसार्टस, रेस्त्राँ, आदि की बत्तियाँ जगमगाती रहती हैं। क्रूज पर यात्रियों को भी नाचने के लिए आमंत्रित किया जाता है और तेज गोइन संगीत के बीच पूरा वातावरण ऐसा समा बांधता है कि घर आकर भी वर्षों नहीं भूलता।

गोवा में दो नदियाँ प्रमुख हैं–ज्वारी नदी और माण्डवी नदी। मिट्‌टी हल्की लाल और दानेदार – काजू, नारियल आदि फसलों के लिए बढ़िया।

पुर्तगाली शासन के दौरान बना किला – 'गोवा फोर्ट' भी देखने लायक है, यद्यपि यह पूरा नहीं बचा है।

कब जाएँ –

गोवा में मार्च से मई तक गर्मी पड़ती है। उस समय घूमना कठिन हो जाता है। जून से अगस्त तक वर्षा होती है और खूब होती है। सितम्बर में भी वर्षा का कुछ प्रभाव रहता है। अक्टूबर से फरवरी के आखिरी तक गोवा घूमने लायक होता है। विदेशी पर्यटक भी इस समय खूब आते हैं।

कैसे जाएँ –

गोवा बस, रेल और वायुमार्ग से जुड़ा है। परन्तु यदि मुम्बई से कोंकण रेल से गोवा जाएँ तो यह अद्‌भुत होगा। कोंकण रेल लाइन कठिनाई से बनाई गई थी। खूबसूरत वादियाँ, नदियाँ, जंगल, अनेक सुरंगे यात्रा को अद्‌भुत बना देती हैं। न शहर, न मकानों की भीड़, न खेत आदि। केवल प्रकृति पूरी यात्रा के दौरान आपके साथ रहेगी। मुम्बई से कोंकण रेल द्वारा एक बार गोवा अवश्य जाना चाहिए।

कहाँ ठहरें –

गोवा में छोटे–बड़े अनेक होटल हैं। यह राज्य पर्यटन के लिए प्रसिद्ध है। अतः साधारण होटल से लेकर पाँच सितारा होटल तक यहाँ उपलब्ध हैं। जाने के पूर्व यदि नेट पर या एजेंसी के माध्यम से बुकिंग करवा ली जाए तो ज्यादा अच्छा रहता है।

क्या खाएँ –

गोवा में नारियल पानी तो खूब पीना चाहिए क्योंकि यह न केवल ताजा होता है बल्कि सेहत के लिए भी अच्छा रहता है। भोजन में गोवा में मछलियाँ, केकड़े खूब उपलब्ध रहते हैं। शाकाहारियों के लिए गोवा में रोटी, चावल, सब्जी, दाल के अलावा दक्षिण भारतीय भोजन व चाय, कॉफी भी उपलब्ध रहती है।

क्या खरीदें –

गोवा से खरीदने लायक वस्तुओं में सूती वस्त्र, परम्परागत वस्त्र व गोवा के समुद्री तटों, नारियल वृक्ष के चित्रों वाले वस्त्र खरीदे जा सकते हें। 'आम–पापड़' और 'कोकम सरबत (शर्बत)' भी लिए जा सकते हैं। कोकम एक

स्थानीय फल होता है। उसका सरबत (शर्बत) हाजमे के लिए अच्छा रहता है। परन्तु स्वाद और अपने शहर के मौसम और अपने स्वास्थ्य के अनुसार ही कोकम शर्बत लें व उसका प्रयोग दुकानदार से पूछ लें। काजू गोवा की प्रमुख फसलों में से एक है परन्तु काजू खरीदने में सस्ते के चक्कर में खराब काजू भी मिल जाता है जो पीला पड़ जाता है या छोटे–छोटे कीड़े पड़ जाते हैं। पूछताछ कर अच्छी दुकान से मोटे दाने का काजू लेना चाहिए।

स्थानीय वाहन –

गोवा में घूमने के लिए तीन–चार दिन तो चाहिएँ ही। ओल्ड गोवा, न्यू गोवा में एक–एक दिन तो लगेगा ही। एक दिन समुद्री स्नान व खरीदारी में लग ही जाता है। यहाँ पर सिटी बस चलती हैं। ऑटो या प्राइवेट टैक्सी भी पूरे दिन या पूरे तीन–चार दिन घूमने के लिए बुक कर सकते हैं। शाम को सिटी बस सेवा जल्दी बन्द हो जाती है। अतः शाम होने तक अपने ठिकाने पर लौट आएँ। वैसे परिवार के साथ घूमने के लिए प्राइवेट टैक्सी करना ठीक होगा भले ही जेब पर कुछ भारी पड़े।

सूर्य, समुद्र, संस्कृति का शहर गोवा मौज–मस्ती की लिए प्रसिद्ध है। यहाँ के निवासी भी मेहनती व हँसमुख होते हैं, मददगार भी होते हैं। उनकी भावनाओं का ध्यान रखते हुए गोवा का आनन्द लें और वापसी के समय गोवा आपको फिर बुलाएगा। नाम ही ऐसा है गो ..... आ।

हमारे

सतर्कता जागरूकता सप्ताह

वर्ष 2006 से प्रतिवर्ष 10 जनवरी को "विश्व हिन्दी दिवस" मनाया जाता है।

राष्ट्रीय पर्व हमारे नौ निहालों के संग

देशभक्ति के रंग, कार्मिकों के बच्चों के संग

अनुच्छेद 210 विधान–मंडल में प्रयोग की जाने वाली भाषा का प्रावधान करता है।

देशभक्ति के रंग, कार्मिकों के बच्चों के संग

सतलुज धारा वर्ष 2016-17 अंक का विमोचन

समाचार पत्रों की नजर से

कर्मचारी राज्य बीमा निगम, चंडीगढ़ हिंदी में काम करने में अव्वल रहने पर सम्मानित

चंडीगढ़ | वाराणसी में डीज़ल लोकोमोटिव वर्क्स, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की ओर से पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया। इसमें क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, चंडीगढ़ को राजभाषा हिंदी के श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए 'ख' क्षेत्र के 50 से अधिक कर्मचारियों के कार्यालयों की श्रेणी में प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्रीराम नाइक बतौर मुख्यअतिथि शामिल हुए। ... राजभाषा विभाग ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

राज्य बीमा निगम चंडीगढ़ को राजभाषा का प्रथम पुरस्कार

चंडीगढ़। क्षेत्रीय कार्यालय कर्मचारी राज्य बीमा निगम चंडीगढ़ राजभाषा हिन्दी में श्रेष्ठ कार्य के लिए प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। वाराणसी में हुए कार्यक्रम में भारत सरकार की ओर से पुरस्कार वितरण समारोह में क्षेत्रीय कार्यालय कर्मचारी राज्य बीमा निगम चंडीगढ़ को राजभाषा हिंदी के श्रेष्ठ कार्यान्वयन के क्षेत्र में 50 से अधिक कर्मचारियों के कार्यालयों की श्रेणी प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उत्तर प्रदेश के राज्यपाल राम नाइक के हाथों कर्मचारियों को सम्मानित किया गया। क्षेत्रीय कार्यालय कर्मचारी राज्य बीमा निगम की ओर से सुनील तनेजा क्षेत्रीय निदेशक ने राज्यपाल से शील्ड प्राप्त की। राकेश शर्मा सहायक निदेशक को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम, चंडीगढ़ राजभाषा में श्रेष्ठ कार्य के लिए सम्मानित

कर्मचारी राज्य बीमा निगम, चंडीगढ़ राजभाषा में श्रेष्ठ कार्य के लिए सम्मानित

क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ पुरस्कृत

राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाने की दिशा में सर्वोत्कृष्ट कार्य करने वाले केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों को प्रोत्साहित करने के लिए सरकार की राजभाषा नीति के अनुरूप प्रतिवर्ष पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा कर्मचारी राज्य बीमा निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, चण्डीगढ़ को राजभाषा हिन्दी के श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए 'ख' क्षेत्र में वर्ष 2016–17 के लिए प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार श्री राम नाईक, माननीय राज्यपाल, उत्तर प्रदेश द्वारा प्रदान किया गया।

मातृभाषा हिंदी को बनाएंगे दुनिया की भाषा

...ताकि फलक पर चमकती रहे हिंदी की बिंदी

राज्य बीमा निगम चंडीगढ़ को राजभाषा का प्रथम पुरस्कार

उतार फेंको अंग्रेजी भाषा का चोला, अपनाओ हिंदी

हिन्दी कार्यशाला

हिन्दी दिवस

धारा 3(3)

पांच बिन्दु

14 सितम्बर भारत का वो गौरवशाली दिन जब हमने अंग्रेजी भाषा की त्रासदी को आधिकारिक रूप से झेलने के दंश से मुक्त कर अपनी भारतीय भाषा को राजभाषा के रूप में चुनते हुए मैकाले की भाषा नीति को ठेंगा दिखाया। उसी गौरवशाली दिन के, हिन्दी दिवस के राजभाषा उत्सव को मनाने के कुछ चित्र- जहाँ हिन्दी है, गर्व है, उत्सव है, उत्साह है और फिर से राजभाषा हिन्दी ही है...

नियम 5

राजभाषा संकल्प 1968

राजभाषा अधिनियम 1963

नियम 11

राजभाषा नियम 1976

हिन्दी दिवस 2017

अनुच्छेद 345 राज्य की राजभाषा या राजभाषाओं के संबंध में प्रावधान करता है।

हिन्दी दिवस 2017

क्षेत्रीय कार्यालय

हिन्दी दिवस

क्षेत्रीय कार्यालय

हिन्दी

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
क्षेत्रीय कार्यालय
पंजाब, चण्डीगढ़

क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, चण्डीगढ़ में राजभाषा पखवाड़ा तथा हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन

मुख्यालय के निदेशानुसार राजभाषा के प्रचार व प्रसार के उद्देश्य को ध्यान में रखकर क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, चंडीगढ़ में दिनांक 01.09.2017 से 15.09.2017 तक राजभाषा पखवाड़ा मनाया गया। पखवाड़े के आरंभ होने से पहले ही परिपत्र जारी कर राजभाषा पखवाड़े का महत्व बताते हुए सभी अधिकारियों व कर्मचारियों से हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करने व पखवाड़े के दौरान आयोजित की जाने वाली विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेने के लिए अनुरोध किया गया था। 01 सितम्बर को ही क्षेत्रीय कार्यालय परिसर में प्रमुख स्थानों पर राजभाषा पखवाड़े के संबंध में आकर्षक बैनर लगा दिए गए थे। राजभाषा कार्मिकों ने विभिन्न शाखाओं में संपर्क कर हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग के संबंध में कार्मिकों को सहयोग दिया। राजभाषा पखवाड़े के दौरान निम्नानुसार हिन्दी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया :–

1.	दिनांक 01.09.2017 ...	हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता **(i) राजभाषा हिंदी के विकास में भाषा प्रौद्योगिकी का योगदान** **(ii) बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान में जन सहभागिता का महत्व**
2.	दिनांक 05.09.2017 ...	हिन्दी टिप्पण व आलेखन प्रतियोगिता
3.	दिनांक 08.09.2017 ...	राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता
4.	दिनांक 11.09.2017 ...	हिन्दी वाक् प्रतियोगिता

क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ के अधिकारियों व कर्मचारियों ने इन प्रतियोगिताओं में उत्साहपूर्वक भाग लिया।

हिन्दी दिवस समारोह :–

क्षेत्रीय निदेशक श्री सुनील तनेजा की अध्यक्षता में दिनांक 14.09.2017 को हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। क्षेत्रीय कार्यालय, चण्डीगढ़ के मनोरंजन क्लब में समारोह का आयोजन किया गया। माननीय सदस्य क.रा.बी.निगम व स्थायी समिति श्री रमाकान्त भारद्वाज, समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में सादर आमंत्रित किए गए थे। क्षेत्रीय निदेशक महोदय ने पुष्प गुच्छ भेंट कर मुख्य अतिथि का स्वागत किया। समारोह का शुभारंभ पंचदीप प्रज्जवलन से हुआ। मुख्य अतिथि श्री रमाकान्त भारद्वाज, श्री सुनील तनेजा, क्षेत्रीय निदेशक तथा गणमान्य अधिकारियों द्वारा पंचदीप प्रज्जवलित किया गया। इसके पश्चात् कार्यालय की कुछ महिला कर्मियों द्वारा प्रार्थना गान प्रस्तुत किया गया। मुख्यालय के निदेशानुसार क्षेत्रीय निदेशक महोदय द्वारा सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को मुख्यालय द्वारा परिचालित सतर्कता संबंधी शपथ दिलाई गई।

तत्पश्चात् श्री राजेश शर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने श्री श्याम कुमार, उप निदेशक (राजभाषा), उत्तरी अंचल को मुख्य अतिथि का परिचय एवं हिन्दी दिवस समारोह की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालने हेतु मंच पर आमंत्रित किया। श्री श्याम कुमार ने मुख्य अतिथि श्री रमाकान्त भारद्वाज का समारोह में उनकी गरिमामयी उपस्थिति के लिए आभार व्यक्त किया तथा उनकी विशिष्ट उपलब्धियों से उपस्थित कार्मिकों को अवगत करवाया। तत्पश्चात् उन्होंने समारोह परिचय प्रस्तुत करते हुए राजभाषा हिंदी की विकास यात्रा को दृष्टांतों सहित मनोहारी एवं सजीव ढंग से प्रस्तुत किया। श्री राजेश शर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने शाखा द्वारा वर्ष के दौरान संचालित विभिन्न क्रियाकलापों का ब्यौरा पी.पी.टी. के माध्यम से प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि क्षेत्रीय कार्यालय में प्रत्येक तिमाही में

विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन किया जाता है जिसमें राजभाषा नियमों के अनुपालन तथा लक्ष्यों की प्राप्ति की समीक्षा की जाती है। क्षेत्र में हिन्दी संबंधी कार्यों की सराहना करते हुए उन्होंने बताया कि मुख्यालय द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, पंजाब को वर्ष 2016–17 के लिए 'ख' क्षेत्र में श्रेष्ठतम कार्यान्वयन के लिए शील्ड भी प्रदान की गई है। उन्होंने श्री श्याम कुमार, उप निदेशक (राजभाषा), उत्तरी अंचल के साथ मुख्यालय द्वारा राजभाषा सम्मेलन में प्रदान की गई शील्ड को विधिवत् रूप से क्षेत्रीय निदेशक महोदय को सौंपा। इस पर सभाकक्ष में उपस्थित जनसमूह ने ज़ोरदार करतल ध्वनि से हर्ष व्यक्त किया। राजभाषा सम्मेलन में इस अवसर पर लिए गए छायाचित्र भी प्रदर्शित किए गए। सभाकक्ष ज़ोरदार करतल ध्वनि से पुनः गूंज उठा जब गृह पत्रिका 'सतलुज धारा' के वर्ष 2016–17 अंक को प्रथम पुरस्कार प्रदान किए जाने संबंधी छायाचित्र प्रदर्शित किए गए। सहायक निदेशक (राजभाषा) द्वारा पावर प्वाइंट के माध्यम से उपयोगी हिंदी ई–टूल्स की जानकारी भी दी गई। इसके पश्चात् क्षेत्रीय निदेशक श्री सुनील तनेजा ने महानिदेशक महोदय द्वारा इस अवसर पर जारी संदेश को पढ़कर सुनाया। सभी ने इसे ध्यानपूर्वक संज्ञान में लिया।

क्षेत्रीय कार्यालय, पंजाब के कर्मचारियों द्वारा इस अवसर पर एक आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम का शुभारंभ श्रीमती तृप्ति दीक्षित, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक द्वारा प्रस्तुत भक्ति गीत से किया गया। तत्पश्चात् श्रीमती सुमन शर्मा, सहायक, श्रीमती पूनम पासी, उ.श्रे.लिपिक, श्री सुरजीत सिंह सैणी, सहायक, श्री सुरेन्दर सिंह वालिया, सहायक, श्रीमती पूनम कर्णवाल, अधीक्षक, श्री दमनप्रीत सिंह सुपुत्र श्री हरविन्द्र सिंह, सहायक तथा मलकीत सिंह द्वारा सुमधुर गीत प्रस्तुत किए गए। सुश्री मनस्वी यादव सुपुत्री श्रीमती कृष्णा कुमारी, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक द्वारा नृत्य प्रस्तुत किया गया। सुश्री मेधना ककारिया, उ.श्रे.लिपिक और श्री राजेश शर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा) द्वारा प्रस्तुत कविता पाठ भी कार्यक्रम का विशेष आकर्षण रहा। सांस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान श्री श्याम कुमार, उप निदेशक (राजभाषा), उत्तरी अंचल ने मंच का संचालन किया जो अपने आप में ही एक आकर्षण था।

सभी पुरस्कार विजेताओं को मुख्य अतिथि तथा क्षेत्रीय निदेशक महोदय द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए। हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करने पर अंतर्शाखा राजभाषा चल शील्ड इस बार सामान्य शाखा को प्रदान की गई जिसे राजेश शर्मा, शाखाधिकारी (सामान्य) तथा शाखा के अन्य कार्मिकों ने ग्रहण किया। मुख्य अतिथि तथा क्षेत्रीय निदेशक महोदय द्वारा सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी गई।

तत्पश्चात् श्री दिनेश सिंह, सचिव, अधिकारी संघ तथा श्री वजीर सिंह, सचिव, एसिक संघ पंजाब ने भी इस अवसर पर अपने विचार रखे। क्षेत्रीय निदेशक महोदय ने इस अवसर पर अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा कि पंजाब क्षेत्र को श्रेष्ठतम कार्यान्वयन के लिए शील्ड मिलना एवं हमारी गृह पत्रिका को प्रथम पुरस्कार मिलना हम सब के लिए गर्व एवं गौरव की बात है। उन्होंने कहा कि श्री श्याम कुमार, उप निदेशक (रा.भा.) तथा श्री राजेश शर्मा, सहायक निदेशक (रा.भा.) के कुशल मार्गदर्शन में कर्मचारियों व अधिकारियों को हिन्दी का प्रयोग करने में हर प्रकार से प्रोत्साहित किया जा रहा है। राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में राजभाषा शाखा के कार्मिकों का समर्पण एवं प्रयास अत्यंत सराहनीय है। उन्होंने सभी कर्मचारियों व अधिकारियों से आग्रह किया कि वे अपना सम्पूर्ण कार्य हिन्दी में ही करें।

मुख्य अतिथि श्री रमाकान्त भारद्वाज ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि आज पूरे देश में गौरवमयी राजभाषा उत्सव मनाया जा रहा है । राजभाषा के रूप में हिंदी की अनवरत चलती हुई इस यात्रा को आज साठ वर्ष से ऊपर हो गए हैं। इसमें कोई संशय नहीं कि वर्तमान में हिंदी तकनीक के साथ कदम ताल करती हुए विकास की ओर अग्रसर है। उन्होंने कहा कि अंग्रेजी भाषा में केवल तीस हजार मूल शब्द हैं जबकि हिंदी व संस्कृत भाषा में शब्दों का अथाह भण्डार है। चीन और जापान जैसे विकसित राष्ट्रों में चिकित्सा एवं विज्ञान की भाषा भी उनकी अपनी राष्ट्र भाषाएं हैं।

शायद उनकी प्रगति का आधार भी यही रहा होगा। अब यह कहना उचित नहीं होगा कि आप हिंदी में काम करें या आपसे यह कहा जाए कि अंग्रेजी का प्रयोग न करें बल्कि मैं आपसे यह कहना चाहता हूं कि अब समय आत्मविश्लेषण का है। पश्चिम के लोग संस्कृत में रचित हमारे महान ग्रंथों का अध्ययन कर उनमें छिपे रहस्यों को उजागर कर रहे हैं, समालोचनाएं दे रहे हैं। हमारी भाषा, संस्कृति व रहन–सहन को आदर्श मान रहे हैं। संयुक्त परिवार की संस्कृति को मानव समाज की सर्वोत्तम सोच एवं सुरक्षित जीवन का आधार मान रहे हैं, जबकि हम पश्चिम की संस्कृति को अपना बनाने की कोशिश कर रहे हैं। वास्तव में भाषा, संस्कृति और विकास का आपस में गहरा नाता है तथा भाषा में ही संस्कृति व विकास के बीज समाहित होते हैं। अतः आप लगन से राजभाषा में काम करने का दीप मन में जलाएं, संकल्प लें। उन्होंने कहा कि कुछ कार्य ऐसे हैं जिनको हमें अपने निजी जीवन में भी अपना लेना चाहिए जैसे हम अपने हस्ताक्षर हमेशा हिंदी में ही करें, अपने घर पर नामपट्ट हिंदी में बनवाकर लगवाएं तथा निमन्त्रण पत्र आदि हिंदी में ही छपवाएं। मुख्य अतिथि ने सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी और आशा व्यक्त की कि भविष्य में अधिकाधिक कर्मचारी व अधिकारी इन प्रतियोगिताओं में भाग लेंगे। धन्यवाद ज्ञापित करते हुए श्री शिव गुप्ता, उप निदेशक ने समारोह में उपस्थित होने के लिए मुख्य अतिथि का आभार व्यक्त किया। उन्होंने समारोह के सफलतापूर्वक आयोजन के लिए सभी अधिकारियों व कर्मचारियों के सहयोग की सराहना की।

समारोह के अंत में सभी को अल्पाहार वितरित किया गया तथा राष्ट्रगान के पश्चात् समारोह का समापन किया गया। समारोह के आयोजन के संबंध में चण्डीगढ़ से प्रकाशित समाचार पत्रों में समाचार भी प्रकाशित हुए ।

स्वागत हमारी परम्परा

मंत्रमुग्ध कर्मी

राजभाषा पखवाड़ा–2017 के दौरान आयोजित विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों की सूची:–

हिंदी निबन्ध प्रतियोगिता दिनांक :01.09.2017

क्रमांक	नाम पदनाम	पुरस्कार
1.	श्रीमती जसवंत कुमारी, सहायक	प्रथम पुरस्कार
2.	श्री प्रेम वल्लभ, नि.श्रे.लिपिक	द्वितीय पुरस्कार
3.	श्री पप्पू कुमार सिन्हा, नि.श्रे.लिपिक	तृतीय पुरस्कार
4.	श्रीमती सुमन लता, उ.श्रे.लिपिक	प्रोत्साहन पुरस्कार
5.	सुश्री मेघना, उ.श्रे.लिपिक	प्रोत्साहन पुरस्कार

हिंदी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता दिनांक : 05.09.2017

क्रमांक	नाम पदनाम	पुरस्कार
1.	श्री अमित बहादुर, सहायक	प्रथम पुरस्कार
2.	श्री संजय कुमार दास, सा.सु.अधिकारी	द्वितीय पुरस्कार
3.	श्री सरवन कुमार, सा.सु.अधिकारी	तृतीय पुरस्कार
4.	श्री संदीप सांगवान, सहायक	प्रोत्साहन पुरस्कार
5.	श्रीमती सुमन लता, उ.श्रे.लिपिक	प्रोत्साहन पुरस्कार

राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता दिनांक 08.09.2017

क्रमांक	नाम पदनाम	पुरस्कार
1.	श्री अमित बहादुर, सहायक	प्रथम पुरस्कार
2.	श्री प्रेम वल्लभ, नि.श्रे.लिपिक	द्वितीय पुरस्कार
3.	श्री संजय कुमार दास, सा.सु.अधिकारी	तृतीय पुरस्कार
4.	श्री पप्पू कुमार सिन्हा, नि.श्रे.लिपिक	प्रोत्साहन पुरस्कार
5.	श्रीमती पूनम कर्णवाल, अधीक्षक	प्रोत्साहन पुरस्कार

हिंदी वाक् प्रतियोगिता दिनांक 11.09.2017

क्रमांक	नाम पदनाम	पुरस्कार
1.	श्री अमित बहादुर, सहायक	प्रथम पुरस्कार
2.	श्री संजय कुमार दास, सा.सु.अधिकारी	द्वितीय पुरस्कार
3.	श्री दिनेश सिंह, अधीक्षक	तृतीय पुरस्कार
4.	श्री वजीर सिंह, सहायक	प्रोत्साहन पुरस्कार
5.	श्री संदीप सांगवान, सहायक	प्रोत्साहन पुरस्कार

आपके कार्यालय की गृह पत्रिका **''सतलुज धारा''** का अंक 2016–17 प्राप्त हुआ। हार्दिक धन्यवाद।

इस अंक के मुखपृष्ठ की संकल्पना प्रशंसनीय है। यह पत्रिका कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की साहित्यिक चेतना को आकार देती है। हमेशा की तरह पत्रिका की साजसज्जा, निहित रचनाएँ, लेख, कविताएँ अत्यन्त रोचक, उपयोगी और उत्कृष्ट हैं। 'हिंदी ई–टूल्स', 'सतलुज धारा', 'बेटी', ओढ़ के तिरंगा क्यों पापा आए हैं, 'श्रद्धांजली', 'नारी', पंचदीप, 'वो पल', 'दान और त्याग' आदि रचनाएँ विशेष रूप से पठनीय हैं। पत्रिका में विभिन्न कार्यक्रमों की झलक कार्मिकों की क्रियाशीलता का परिचायक है। पत्रिका के ई–संस्करण तथा क्यूआर कोड की उपलब्धता अभिनव प्रयोग है ।

पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई, शुभेच्छा है कि **''सतलुज धारा''** इसी तरह अविरल बहती रहे।

(डी. के मिश्र)
अपर आयुक्त
क्षेत्रीय कार्यालय, फरीदाबाद

आपके कार्यालय की गृहपत्रिका **''सतलुज धारा''** की प्राप्ति हुई । आपको सहृदय धन्यवाद। पत्रिका की प्रस्तुति अत्यंत आकर्षक है एवं सभी रचनाएँ पठनीय हैं। पत्रिका में प्रकाशित लेख एवं रचनाएँ अधिकारियों एवं कर्मचारियों की मातृभाषा के प्रति रुचि को दर्शाती है। **''सतलुज धारा''**, ''भगवान और माँ'', ''ओढ़ के तिरंगा क्यों पापा आए हैं'', ''रेत पर पैरों के निशान'' इत्यादि रचनाएँ विशेष रूप में पठनीय हैं। इसके अतिरिक्त पत्रिका में प्रस्तुत की गई विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियाँ कार्मिकों की क्रियाशीलता का परिचायक हैं।

अंततः पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी लेखकों, सहयोगियों एवं संपादक मंडल को बधाई एवं उन्हें पत्रिका के आगामी अंकों के प्रकाशन हेतु ढेर सारी शुभकामनाएँ ।

रचिता बिस्वास
चिकित्सा अधीक्षक
चिकित्सा महाविद्यालय एवं आदर्श अस्पताल
राजाजी नगर, बेंगलुरू

आपके कार्यालय से प्रकाशित विभागीय हिन्दी पत्रिका **'सतलुज धारा'** का अंक वर्ष 2016–17 प्राप्त हुआ। हार्दिक धन्यवाद।

पत्रिका का मुखपृष्ठ अत्यंत मनोरम है। पत्रिका का संपादन एवं मुद्रण सुरुचिपूर्ण ढंग से किया गया है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक हैं तथापि 'कार्योपयोगी हिन्दी ई–टूल्स', 'सतुलज धारा', 'पंचदीप : सामाजिक सुरक्षा की अद्भूत छतरी' एवं 'वो पल' आदि रचनाएं अमूल्य हैं।

पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी सहयोगी, लेखक एवं रचनाकार बधाई के पात्र हैं। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ।

(आर.पी.कुरील)
सहायक निदेशक
क्षेत्रीय कार्यालय, कानपुर

आपके कार्यालय के पत्र सं. 12–ए/49/11/83/2016–रा.भा., दिनांक 05/05/2017 के साथ आपके कार्यालय की गृह पत्रिका **''सतुलज धारा''** का वर्ष 2016–17 अंक प्राप्त हुआ। हार्दिक धन्यवाद।

पत्रिका में छपी रचनाएँ रोचक एवं पठनीय हैं। पत्रिका में छपे सभी लेख विविधमुखी एवं प्रशंसनीय हैं। हिन्दी भाषा में 'ओढ़ के तिरंगा क्यों पापा आए हैं', 'निर्मल गंगा', 'कल्पवृक्ष' एवं 'समय का महत्व' विशेष रूप से पठनीय हैं। वर्ष 2017–18 के आगामी अंक के लिए संपादक मंडल को शुभकामनाएँ।

धन्यवाद।

(धीरेन्द्र कुमार)
सहायक निदेशक (रा.भा.प्रभारी)
उप क्षेत्रीय कार्यालय, ठाणे

आपकी पाती

आपकी पत्रिका **'सतलुज धारा'** के वर्ष 2016–17 के अंक की प्राप्ति हुई। इस अंक के लिए आपको हार्दिक धन्यवाद। कृपया प्रतिक्रिया सादर स्वीकार करें।

बधाई	आपके कार्यालय को राजभाषा के श्रेष्ठ कार्यान्वयन हेतु क.रा.बी. निगम, मुख्यालय से प्राप्त प्रथम एवं नराकास–चंडीगढ़ से राजभाषा कार्यान्वयन के लिए प्राप्त तृतीय पुरस्कार हेतु।
प्रशंसनीय	पत्रिका में राजेश शर्मा, श्याम कुमार, मनीषा, तरसेम लाल, अश्वनी कुमार, तृप्ति दीक्षित, बलदेव राज, रामराज वर्मा एवं भारतभूषण वालिया की रचनाएँ।
आकर्षक	पत्रिका का मुखपृष्ठ एवं विविध आयोजनों के छायाचित्र।
विशेष	श्री राजेश शर्मा जी का लेख बहुत ही उपयोगी है साथ ही क्यूआर कोड व्यवस्था से इसे अधिक पाठकों तक पहुँचाया जा सका। यह प्रयास विशेष प्रशंसनीय है।
सुझाव	पृष्ठ 33–36 पर मुद्रित चित्र छोटे और अस्पष्ट हैं जिन्हें आकर्षक बनाया जा सकता था। प्रशंसनीय रचनाकारों के उत्साहवर्धन हेतु इस पत्र की प्रति भेंट करें।

संपादक मंडल को इस पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हमारी हार्दिक बधाइयाँ। अगले अंक के लिए शुभेच्छाओं सहित।

(मनोज कुमार यादव)
सहायक निदेशक
प्रभारी राजभाषा अधिकारी
उप क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर

आपके कार्यालय द्वारा भेजी गई गृह पत्रिका **'सतलुज धारा'** वर्ष 2016–2017 की एक प्रति हमें प्राप्त हुई है। पत्रिका के मुखपृष्ठ में हरे भरे पेड़–पौधे, रंग बिरंगे–फूलों से सुशोभित पर्वतों के मध्य सतलुज नदी की बहती जलधारा का दृश्य पत्रिका को चार चाँद लगाता है। पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख उच्चकोटि के हैं। श्री राजेश शर्मा द्वारा लिखित कार्योपयोगी हिंदी ई–टूल्स राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने हेतु और आम जन मानस को आधुनिक कम्प्यूटर तकनीक के माध्यम से सीखने का आदर्श ई–टूल्स है। इस शुभ कार्य के लिए हम आपके संपादक – मंडल को हार्दिक बधाई देते हैं।

पत्रिका प्रेषण हेतु बहुत–बहुत धन्यवाद।

(जग मोहन भारद्वाज)
तकनीकी अधिकारी
हिम तथा अवधाव अध्ययन संस्थान
रक्षा मंत्रालय, चण्डीगढ़

आपके पत्र सं.12ए/49/12/83/2016/रा.भा. 67 दिनांकः 05 मई, 2017 द्वारा भेजी गई पत्रिका की प्रति हमें प्राप्त हुई। पत्रिका के 2016–17 अंक के लिए हार्दिक बधाई।

पत्रिका में समाहित समस्त सामग्री सुरुचिपूर्ण एवं सूचनाप्रद है। पत्रिका का मुख पृष्ठ प्रकृति का अद्भुत नजारा है। कार्योपयोगी हिंदी ई–टूल्स (श्री राजेश शर्मा), दो घड़ी का जाप (श्रीमती मीनू भाटिया), ओढ़ के तिरंगा क्यों पापा आए हैं (श्री अमित बहादुर), कल्पवृक्ष तथा संस्कार (श्री संजीव मदान), नेकी (श्रीमती सुनीता रानी), गुस्सा छोड़ जाता है मन पर घाव (श्री जसवंत सिंह), समय का महत्व (श्री तीर्थ राय) तथा चरण–स्पर्श (श्री सुरिंद्र वालिया) आदि रचानाएँ काफी रचनात्मक व सराहनीय हैं।

पत्रिका का कलेवर अच्छा है। हर पृष्ठ पर हिंदी के बारे में लिखी पाद टिप्पणी काफी सराहनीय है। संपादन व्यवस्थित ढंग से किया गया है। प्रकाशन से जुड़े सभी सज्जनों को अभिनंदन।

(आजाद सिंह)
उप निदेशक (राजभाषा प्रभारी)
उप क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलुरू

आपके पत्र संख्या 12ए/49/12/83/2016/रा.भा., दिनांक : 05.05.2017 के साथ आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिका **''सतुलज धारा''** के अंक वर्ष 2016–17 की प्रति प्राप्त हुई, पत्रिका अग्रेषण के लिए हार्दिक धन्यवाद।

सर्वप्रथम 2015–16 में श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन के लिए 'ख' क्षेत्र में प्राप्त प्रथम पुरस्कार एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति चंडीगढ़ से राजभाषा कार्यान्वयन हेतु प्राप्त तृतीय पुरस्कार के लिए हार्दिक बधाइयाँ।

पत्रिका का मुखपृष्ठ प्रभावी तथा साज–सज्जा आकर्षक तथा मुद्रण कार्य उच्च–कोटि का है। विविध विषयक लेख विशेष रूप से राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में सहायक तथा निगम की कार्यप्रणाली के संबंध में प्रकाशित उपयोगी, रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं जो कार्मिकों की अपनी राजभाषा एवं मातृभाषा हिंदी, अपनी संस्कृति के प्रति अनुराग को अभिव्यक्त करती हैं। साथ ही पत्रिका का ई–संस्करण वर्तमान युग की आवश्यकता के अनुसार है जो सभी कार्यालयों के लिए प्रेरक का कार्य करेगा।

पत्रिका प्रकाशन कार्य से जुड़े सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों को उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए हार्दिक बधाइयाँ। आशा है कि आगामी अंक और भी उपयोगी होगा।

आगामी अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

(विजय बोकोलिया)
उप निदेशक
क्षेत्रीय कार्यालय, देहरादून

आपके कार्यालय से प्रकाशित गृह पत्रिका **'सतलुज धारा'** प्राप्त हुई। पत्रिका प्रेषण के लिए धन्यवाद। विभिन्न विषयों पर रचनाएँ, साज–सज्जा एवं अन्य विवरण बहुत ही आकर्षक है जो पत्रिका की रोचकता बढ़ाती हैं। सूचना प्रौद्योगिकी के चमत्कार पर लिखी रचना काफी ज्ञानवर्धक है। इसको ई–संस्करण में परिवर्तित कर पाठकों तक सुलभ तरीके से पहुँचाने के लिए संपादक मंडल का प्रयास भी काफी सराहनीय है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए समस्त रचनाकारों एवं सम्पादक मंडल को बधाई एवं इसके उत्तरोत्तर प्रगति की शुभकामनाएं ।

(जानकी सिंह)
उप निदेशक
उप क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलुरू

आपके कार्यालय की गृहपत्रिका **'सतलुज धारा'** के 2016–17 अंक की प्रति प्राप्त हुई। सर्वप्रथम वर्ष 2015–16 में श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए पुरस्कारों की प्राप्ति पर बहुत–बहुत बधाई। पत्रिका का डिजिटलाइजेशन एक सराहनीय कदम है।

प्रकृति से सामीप्य दर्शाता मुखपृष्ठ अत्यंत आकर्षक है। इसकी साजसज्जा तथा पृष्ठ संयोजन उच्चकोटि की है। उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक सामग्री के साथ–साथ विविध गतिविधियों के छायाचित्रों ने पत्रिका को एक आकर्षण रूप प्रदान किया है। कुल मिलाकर यह अंक संग्रहणीय है।

संपादक मंडल को तथा सभी रचनाकारों को साधुवाद। हमें इसके अगले अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

(प्रमोद कुमार निराला)
सहायक निदेशक (रा.भा.)
क्षेत्रीय कार्यालय, पटना

'सतलुज धारा' के नवीन अंक के प्रेषण के लिए धन्यवाद। सर्वप्रथम पत्रिका के ई–संस्करण के लिए बधाई। हिन्दी गृहपत्रिका के क्षेत्र में यह एक प्रशंसनीय उपलब्धि है। पत्रिका का कलेवर तथा रचनाओं का संकलन बहुत अच्छा है। सभी रचनाएँ मनोरंजक हैं। खासकर 'समय का महत्व', 'नारी', 'खोज खुद की' इत्यादि पठनीय तथा ज्ञानवर्धक हैं। 'ओढ़ के तिरंगा क्यूँ पापा आये हैं' बहुत ही विचलित करने वाली तथा मर्मांत है। सभी रचनाएँ रोचक एवं पठनीय हैं। ऐसे उत्कृष्ट संपादन के लिए पत्रिका का संपादक मंडल निश्चय ही बधाई का पात्र है।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ।

(सोनल गोयल)
सहायक निदेशक (रा.भा.)
उप क्षेत्रीय कार्यालय, पुणे

आपकी पाती

आपके कार्यालय से प्रकाशित गृह पत्रिका **''सतलुज धारा''** का अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका प्रेषण के लिए हार्दिक धन्यवाद।

विभिन्न विषयों पर रचनाकारों के रोचक एवं ज्ञानवर्धक लेखों और कार्यालय की विभिन्न गतिविधियों के सुंदर छायाचित्रों से सुसज्जित पत्रिका का यह अंक बहुत ही सजीव एवं पठनीय है। पत्रिका की प्रस्तुति एवं साज–सज्जा आकर्षक एवं मनोहारी है। पत्रिका का मुद्रण एवं पृष्ठ संयोजन उच्चकोटि का है। पत्रिका में सम्मिलित सभी लेख रुचिकर, ज्ञानवर्धक एवं उपयोगी हैं। रचनाओं में 'सूचना प्रौद्योगिकी का चमत्कार', 'सतलुज धारा', 'भगवान और माँ, 'ओढ़ के तिरंगा क्यों पापा आए हैं, श्रद्धांजली', 'यक्ष एवं युधिष्ठिर संवाद', 'पंचदीपः सामाजिक सुरक्षा की अद्भुत छतरी', आउटरीच कार्यक्रम', 'ट्रेकिंग एक्सपीडिशन–'संदकफू–गुरडूम–2016', 'मेरी द्वारका यात्रा', 'दान और त्याग', 'संविधान और कर्त्तव्य' व 'चरण–स्पर्श' ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं । कार्यालय में सम्पन्न विभिन्न गतिविधियों के छायाचित्र पत्रिका को जीवंत और रोचक बनाते हैं।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए आपको तथा पत्रिका प्रकाशन समिति एवं सभी सहयोगियों को हार्दिक शुभकामनाएँ।

(हरशरण मीणा)
उप निदेशक (राजभाषा प्रभारी)
आदर्श अस्पताल, रामदरबार

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित विभागीय हिंदी पत्रिका **'सतलुज धारा'**, वर्ष 2016–17 की प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका के अग्रेषण के लिए हार्दिक आभार।

पत्रिका का मुख्य पृष्ठ आकर्षक है पत्रिका में प्रकाशित समस्त लेख अच्छे एवं उच्च कोटी के हैं। जिनमें से 'वो मंजिल मुझे मिलेगी जरूर', 'ओढ़ के तिरंगा क्यों पापा आए हैं', 'निर्मल गंगा', 'पंचदीप : सामाजिक सुरक्षा की अदभूत छतरी' आदि रनचाएँ विशेष रूप से सराहनीय हैं। विभिन्न गतिविधियों के छायाचित्रों से पत्रिका और भी रोचक एवं उपयोगी बनी है कुल मिलाकर पत्रिका संग्रहणीय बनी है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल एवं सहयोगियों को हमारी हार्दिक बधाइयाँ। आशा है कि भविष्य में भी पत्रिका का प्रकाशन अनवरत जारी रहेगा।

आगामी अंक के लिए शुभकामनाएँ।

बलदेव राज
उप निदेशक (प्रभारी राजभाषा)
उप क्षेत्रीय कार्यालय, जालंधर

संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका **''सतलुज धारा''** की प्राप्ति हुई। अतः आभार स्वीकार करें।

इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रनचाएँ पाठकों के लिए प्रभावशाली, रोचक, ज्ञानवर्द्धक, उच्चकोटि एवं मन को लुभाने वाली हैं। श्री राजेश शर्मा जी ने अपने लेख ''कार्योपयोगी हिन्दी ई–टूल्स'' के माध्यम से दी गई जानकारी कार्यालय में हिन्दी कार्य को सरल एवं सुगम बनाने में सहायक है। श्री अमित बहादुर जी द्वारा रचित कविता ''ओढ़ के तिरंगा क्यों पापा आए हैं'' को पढ़कर शहीद सिपाही के परिवार के प्रति वेदना जागृत होती है। श्री संजीव मदान जी की कहानी ''कल्पवृक्ष'' महिलाओं के ह्रदय की विशालता एवं नए परिवेश में अपने आपको ढालने की कला को परिलक्षित करती है। श्री बलदेव राज जी की ''मेरी द्वारका यात्रा'' वृतांत रोचक एवं पठनीय है।

हिन्दी की सार्थकता के लिए प्रयासरत आपकी पत्रिका **''सतलुज धारा''** के उज्ज्वल भविष्य के लिए 'सुगंधा' परिवार की हार्दिक शुभकामनाएँ।

रा. नाथ
हिन्दी अधिकारी
महालेखाकार (लेखा परीक्षा)
पंजाब, चण्डीगढ़

हमारे प्रयास, आपकी नज़र

रॉक गार्डन, चण्डीगढ